मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

मानवता का गिरता स्तार

''हमारे देश में मानव एवं मानवता का स्तर इतना नीचे गिर गया है कि यदि कोई ज़रूरतमन्द किसी कार्यालय में जाता है तो उसे ग़रज़मन्द देखकर यह समझा जाता है कि एक शिकार फंस गया। मोटा शिकार हाथ आ गया। जैसे वह इन्सान नहीं कोई चूहा या ख़तरनाक जानवर हुआ जो पिंजड़े में फंस गया हो। भाई! यह क्यों नहीं सोचते कि हमारा एक भाई आया है। इसका काम हमारे द्वारा हो जाए और हम इसका दिल ख़ुश कर दें। यह हमारा भाग्य है कि हमें अपने ही भाई और अपने जैसे एक इन्सान की सेवा का अवसर अल्लाह तआला ने प्रदान किया।''

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०)

APR 17

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

₹10/-

आन्तरिक बीमारियों की गंभीरता

"हम बीमारियों से डरते हैं, उनसे घबराते हैं। बलाओं की दहशत हमारे दिलों में बैठी हुई है और उससे बचने के लिए हर तरह के उपाय करते हैं। यहां तक कि अगर कोई कह दे कि यहां कालरा का एक केस हो गया तो पूरे शहर में दहशत फैल जाती है। हर शख़्स पर ख़ौफ़ छा जाता है और वह समझने लगता है कि उस बीमारी का सबसे पहला शिकार वही होगा। लेकिन व्यवहारिक बीमारियां, यह ग़लत आचार-व्यवहार, जिनको अल्लाह और अल्लाह के रसूल (स०अ०) नापसंद करते हैं, यह भौतिकवाद, विलासता, हर जगह ताक़त के सामने सर झुका देना, इच्छाओं की पूर्ति का मनमाना ढंग, भावनाओं में बहना, आमोद-प्रमोद में लीनता, नाच-गाना, ज़हनी सुकून व आरामतलबी और ऐशपरस्ती के दूसरे साधनों में हद से बढ़ी हुई दिलचस्पी, नेताओं और नारों का अंधा अनुसरण, वास्तविकताओं को अनदेखा करना, बार-बार होने वाले अनुभवों से सबक़ न सीखना, आशाओं और इच्छाओं पर लगाम न होना, इन्सानों का अनुचित सम्मान, राजनीति व राजनीति से परे दूसरे मार्गदर्शकों की पवित्रता और उनके बारे में ग़लतफ़हमियों और लापरवाहियों पर उनके मासूम का विश्वास। यह बीमारियां हमारे अंजाम और हमारे समाज के लिए हज़ारों दुश्मनों और दुश्मनों की हज़ारों टुकड़ियों से कहीं ज़्यादा ख़तरनाक, कहीं अधिक गंभीर और कहीं अधिक चिन्तनीय हैं।**

(आलम-ए-अरबी का अलमिया, पेज: ११५)

दिल व ज़मीर से बेख़बरी

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०)

"शुरूआत से यह इन्सान की कमज़ोरी रही है कि वह बाहरी ख़तरों और दूसरों की दुश्मनी का यक़ीन रखता है और उनको पूरा महत्व देता है। लेकिन ख़तरों की उन बुनियादों और उनके गहरे स्रोतों से बेख़बर रहता है और उनकी ओर पूरा ध्यान नहीं देता जो क़ौम के दिल व ज़मीर और समाज की रग-रग में समाए रहते हैं। जो सामाजिक जीवन में लोगों के व्यवहार में जगह बना चुके हैं। इसीलिए रसूलुल्लाह (स०अ०) ने बहुत ही गूढ़ व प्रभावपूर्ण शब्दों में चेताया (जिसको क़ुरैश के ज्ञानी भा"ा पर पूरी पकड़ रखने के कारण ख़ूब समझते हैं) कि तुमको चाहिए कि उस गंभीर व सदा बने रहने वाले ख़तरे से ख़बरदार हो जो तुम्हारे जिस्म व जान में छिपा हुआ है, लेकिन आंखों से नज़र नहीं आता। तुम उस समय तक ख़तरों से घिरे हुए हो और गड्ढे के कमज़ोर किनारे पर खड़े हो, जब तक अज्ञानता और मूर्तिपूजा पर डटे रहोगे, कुछ समय के फ़ायदे को हमेशा के फ़ायदे से ज़्यादा समझोगे, व्यक्तिगत लाभ को सामूहिक लाभ पर वरीयता देते रहोगे, कमज़ोरों की तुलना में ताक़तवरों का साथ देते रहोगे और उनके पक्ष में पक्षपात करते रहोगे, जब तक तुम भौतिकता के चंगुल में पड़े रहोगे, ताक़वर के सामने सर झुकाए रहोगे, चाहे वे बुत पत्थर के हों या मनु"य के हाथों की कला के आभारी हों या मनु"य के विचारों से जन्में हों, ज्ञान व पड़ताल के आधार पर बनाए गये हों या ख़्याली हों और आशाओं व इच्छाओं के दिलकश ख़्वाब का नतीजा हों, जब तक तुम्हारे यह हालात बाक़ी रहेंगे ख़तरे ख़त्म नहीं हो सकते।**

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०)

(कारवान-ए-ज़िन्दगी, भाग चार, पृष्ठ: १५४-१६२)

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:०४ अप्रैल २०१७ ई० वर्ष:९

संरक्षक

हज़रत मौलाना
सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी
(अध्यक्ष – दारे अरफ़ात)

निरीक्षक

मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्री– दारे अरफ़ात

सम्पादक

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सम्पादकीय मण्डल

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाख़ुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

सह सम्पादक

मो० नफ़ीस ख़ाँ नदवी

अनुवादक

मोहम्मद सैफ़

मुद्रक

मो० हसन नदवी

इस अंक में:

सत्ता परिवर्तन से सबक़.....२
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मन का विश्लेषण.....३
हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

अल्पसंख्यकों को सदृढ़ कार्यप्रणाली का निमार्ण करने की....५
मौलाना असरारुल हक़ क़ासमी

सहाबा के त्याग के कुछ नमूने.....७
मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

एकेश्वरवाद क्या है?.....९
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

जुमा की फ़ज़ीलत और उससे संबंधित कुछ आदेश.....११
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

सीरियन शरणार्थियों का आंखों देखा हाल.....१४
मुफ़्ती अबू लबाबा शाह मन्सूर

न रोज़गार, न कर्ज़ वृद्धि, न निवेश.....१५
पी. चिदम्बरम

रसूलों पर ईमान.....१७
मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

इस्लाम और पश्चिम.....१८
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

पदाधिकारियों की नीलामी.....२०
अबुल अब्बास ख़ाँ

E-Mail: markazulimam@gmail.com www.abulhasanalinadwi.org

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०.229001

प्रति अंक 10रू

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला ख़ाँ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

वार्षिक 100रू०

सम्पादकीय

सत्ता परिवर्तन से सबक़

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

चुनाव के जो परिणाम सामने आए हैं वे ज़्यादा आश्चर्यजनक नहीं, जो होना था वह हो गया। सरकारें आती हैं और जाती हैं। बात यह नहीं है कि सरकार किसकी बनी है। बात यह है कि यह क्यों हुआ, हमसे क्या ग़लतियां हुईं और ग़लतियां भी राजनीतिक से ज़्यादा बुनियादी, मूलभूत व व्यवहारिक हैं, जिनके परिणाम सामने हैं। यदि मुसलमान सत्ता परिवर्तन से सबक़ लें और अपने अन्दर मूलभूत बदलाव लाने का प्रयास करें तो क्या आश्चर्य है कि यह सत्ता परिवर्तन मुसलमानों के पक्ष में हो।

इस्लाम अल्लाह की दी हुई एक अमानत (धरोहर) है। उसकी सुरक्षा का वादा अल्लाह ने किया है। कुरआन अल्लाह की किताब है। उसकी सुरक्षा का वर्णन अल्लाह ने स्वयं अपनी किताब में किया है:

''हम ही ने उस नसीहत (नामा) को उतारा है और निसंदेह हम ही उसकी सुरक्षा करने वाले हैं।''

समस्या न इस्लाम की है न कुरआन की, समस्या मुसलमानों की है। मुसलमानों ने जब ''अल्लाह की रस्सी'' को छोड़ा तो उनकी हैसियत तिनकों की हो गई। हवा के झोंके उनको जहां चाहें उड़ा ले जाएं। आज दुनिया में मुसलमानों की बदहाली का सबसे बड़ा कारण यही है कि इस्लामी शिक्षाएं भुला दी गईं। कुरआन के आदेशों को अनेदखा कर दिया गया है। मुस्लिम क्षेत्रों को देखा जाए तो अन्दाज़ा होता है कि दीन से दूरी कितनी बढ़ती जा रही है। ज्ञान जो इस्लाम का आधार है, मुसलमानों के पास से चला गया है। जिहालत, आपसी झगड़ा और शक व संदेह की दुनिया में मुसलमान जीवन व्यतीत करते हुए नज़र आते हैं। यह वे कारण हैं जिनसे सबकुछ हो रहा है और कोई इसको रोक नहीं सकता। अल्लाह के फ़ैसले मनुष्य के कर्म पर आधारित होते हैं और हदीस में इसकी व्याख्या की गई है। मुसलमानों का संबंध जब दीन–धर्म से टूटता है तो धीरे–धीरे उसके लिए दीन के घेरे को तंग कर दिया जाता है। जब वह स्वयं दीन पर कार्यरत नहीं होता तो अल्लाह ऐसे शासकों को बिठा देता है, जो दीन–धर्म पर अमल करने के रास्ते बन्द कर देते हैं।

अफ़सोस की बात है कि मुसलमानों की एक बड़ी संख्या भयभीत है, जो ज़ाहिरी आंकड़ों को देखकर निर्णय करती है। वे मायूसी का शिकार होते हैं। यह सब ताने–बाने इन्सान बुनता है। फ़ैसले अल्लाह की तरफ़ से होते है और वे कर्म के आधार पर होते हैं। सत्ता परिवर्तन से सबसे बड़ा सबक़ यह होना चाहिए कि मुसलमानों में कार्यक्षमता का निर्माण हो। अपनी पुरानी ग़लतियों से तौबा करके पूरी तरह से इस्लामी ज़िन्दगी का नमूना दूसरों के सामने पेश किया जाए। जो चीज़ श्रेष्ठ है उसको बताने की आवश्यकता नहीं होती, उसको केवल दिखा देना पर्याप्त है। लेकिन हम जिन गुनाहों में पड़े हुए हैं उससे इस्लाम की श्रेष्ठता, मानवता व दयालुता का संदेश दूसरों के सामने कैसे आ सकता है!

यह एक ख़तरे की घंटी है। अगर हम अब भी न जागे और हमने अपनी ग़लतियों के सुधार की चिन्ता न की तो साफ़ है कि राजनीतिक उठापटक से न कुछ हुआ है और न कुछ होगा। हमें एक लम्बे अर्से के लिए तय करना होगा कि हम अपनी सारी ताक़त शिक्षा के क्षेत्र में लगाएं इसमें आरम्भिक दीनी (धार्मिक) शिक्षा के लिए जो भी व्यवस्था संभव हो वह करें। कोई मुसलमान इस्लामी शिक्षा से वंचित न रह जाए। उसके अन्दर इतनी धार्मिक मज़बूती पैदा हो जाए कि वह किसी छलावे का शिकार न हो सके और इसके साथ इस्लाम की व्यवहारिक और सामाजिक व्यवस्था विशेष रूप से अपनाई जाए, ताकि इस्लाम का यह सदाबहार पेड़ अपनी पूरी क्षमताओं के साथ दूसरों के सामने आ सके और वे लोग जो धूप की तेज़ी के कारण झुलस रहे हैं उनको इस पेड़ के साये में आराम करने का अवसर प्राप्त हो सके, तो निसंदेह यह दुनिया जो आज मुसलमानों की दुश्मन नज़र आती है, वह सबसे बढ़कर मुसलमानों की एहसानमन्द होगी।

मन का विश्लेषण

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

अलकुरआनः ''जब कभी उनके पालनहार की ओर से नसीहत (उपदेश) की कोई नई बात उनको पहुंचती है तो खिलवाड़ करते हुए उसको इस हाल में सुनते हैं कि उनके दिल ग़ाफ़िल (असावधान) हैं और अत्याचारी चुपके–चुपके कानाफूसी करते हैं यह तो तुम्हारे ही जैसे इन्सान हैं क्या तुम देखते–भालते जादू में पड़ोगे, कहा मेरा पालनहार आकाश और धरती की हर बात से अवगत है और वह ख़ूब सुनता, ख़ूब जानता है।'' (सूरह अम्बियाः 2–4)

सूरह अम्बिया की पहली आयत में कहा गया था कि लोगों के लिए उनके हिसाब–किताब का समय क़रीब आ गया है किन्तु वे अपनी दुनिया में लगे हुए हैं। उन्होंने अपनेआप को किसी के हवाले कर रखा है। वे यह नहीं सोचते कि यहां कितने दिन ज़िन्दा रहना है। केवल अचेतना में पड़े रहते हैं और इस ओर ध्यान नहीं देते कि आगे भी जाना है। अर्थात अचेतना के कारण वे अपने भविष्य (परलोक) से भी असावधान हैं। यद्यपि दुनिया कमाने में, ऐश्वर्य प्राप्त करने में, विलासता में उनका दिमाग़ बहुत चलता है और वे बहुत होशियार हैं। लेकिन जहां आखिरत (परलोक) की बात आती है वहां असावधान व अचेतन हो जाते है और उन्हें कुछ समझ में नहीं आता। इसीलिए उनकी इस हालत के बारे में कहा गया है कि यदि अभी वे विमुखता दिखा रहे हैं, ईश्वरीय संदेश की ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं, परलोक का विचार और वहां जो कुछ होने वाला है उसकी सोच भी उनके दिमाग़ से हट गई है तो वह समय दूर नहीं जिसमें उन्हें अपनी विमुखता का मज़ा चखना पड़ेगा। विमुख हो जाना अर्थात किसी चीज़ को छोड़कर एक ओर हो जाना।

सूरह अम्बिया की दूसरी आयत में कहा गया कि जब इन्सान को नसीहत (उपदेश) की कोई नई बात बतायी जाती है तो आदमी ध्यान से सुनता है। कभी–कभी पुरानी बात में असावधानी हो जाती है। यह ख़्याल आ जाता है कि कई बार सुना है अब फिर सुन रहे हैं, इस कारण अधिक ध्यान नहीं देता, लेकिन जो नई बात कही जाती है, वह आदमी पूरी सावधानी से सुनता है, यह सोचता है कि यह बात हमें पहले नहीं मालूम थी, यह बिल्कुल नई बात है। लेकिन मुश्रिकीन (बहुदेववादियों) की बात निराली थी। उनको इस प्रकार की किसी बात से कोई लेना–देना नहीं था। इसलिए कहा गया कि यदि उनके सामने कोई नई बात लायी जाती है जो उनके फ़ायदे की हो या परलोक की तो वे इसको इस तरह सुनते हैं कि खेल में लगे हुए रहते हैं, अर्थात अपने खेलकूद में लगे रहते हैं और इसको गंभीरता से नहीं लेते हैं। स्पष्ट है जब किसी चीज़ को गंभीरता के साथ नहीं सुना जाएगा तो उसका कोई लाभ नहीं होगा।

इसके बाद कहा गया कि मुश्रिकीन (बहुदेववादियों) के दिल भोग–विलास में लगे हुए हैं और वे खेल–तमाशों में मस्त हैं। उनका दिली लगाव इन्हीं चीज़ों से है। इसी कारण उनके दिल किसी नई बात या ख़तरे को सुनने के लिए तैयार नहीं हैं। यद्यपि यह कहा जा रहा है कि आगे बड़ा ख़तरा आने वाला है किन्तु उनको इसकी कोई परवाह नहीं। किसी ने कहा, ''बड़ी तेज़ आंधी आ रही है, पेड़ उखड़े जा रहे हैं, लेकिन सुनने वाला कहे, हां! हां! ठीक है, और फिर अपने काम में लग जाए, खाने–पीने में व्यस्त हो जाए, बातों में लग जाए, तो फिर परिणाम यह होगा कि आंधी आएगी और सबकुछ तबाह कर देगी। इसी प्रकार उनके दिल आख़िरत (परलोक) से असावधान होकर जिस आमोद–प्रमोद में लगे हुए हैं एक दिन यही आमोद–प्रमोद उन्हें तबाह कर देगा। वे यह नहीं सोचते कि जो बात कही जा रही है वह कितनी महत्वपूर्ण है और इसका आधार किस पर है।

कहा गया कि यह लोग आपस में चुपके–चुपके बातें करते हैं और रसूलुल्लाह (स0अ0) पर टीका–टिप्पणी करते हैं कि यह जो बात कह रहे हैं उसकी कोई वास्तविकता नहीं। इस प्रकार के लोग आते रहते हैं। यह बस अपनी ओर से बातें कह रहे हैं। उनकी बातों की ओर ध्यान देने की कोई आवश्यकता नहीं है। ऐसे लोगों के बारे

में कहा गया है कि यह लोग वास्तव में अत्याचारी लोग हैं। ज़ुल्म (अत्याचार) का अरबी भाषा में अर्थ यह है कि जो काम करना चाहिए उससे हटकर काम कर लिया जाए, अर्थात कोई सही रास्ते से हट जाए और सही काम को छोड़कर ग़लत काम में लग जाए, यह अत्याचार है। इसी प्रकार ऐसा काम करना कि जिससे आदमी को नुक़सान पहुंचे अरबी भाषा के अनुसार यह भी अत्याचार है। यह जो अत्याचार कर रहे हैं वे अल्लाह का नुक़सान नहीं कर रहे हैं न ही किसी दूसरे को हानि पहुंचा रहे हैं अपितु स्वयं अपने साथ अत्याचार कर रहे हैं अर्थात स्वयं का नुक़सान कर रहे हैं। अपने को सत्यमार्ग से हटा रहे हैं और यह नहीं सोचते कि यह लोग जिस प्रकार अपने को तबाह कर रहे हैं उसका क्या परिणाम होगा। इस समय मनोरंजन कर रहे हैं और अल्लाह के आदेशों को अनदेखा कर रहे हैं और उस पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। रसूलुल्लाह (स0अ0) जो आदेश उनको दे रहे हैं उसके बारे में धीरे–धीरे कहते हैं कि अरे यह हमारे ही जैसे एक आदमी हैं, जैसे हम लोग झूठ भी बोलते हैं, सच भी बोलते हैं और धोखा भी देते हैं, इसी प्रकार यह हैं। इनकी बात की कोई विश्वस्नीयता नहीं। यह हम जैसे एक इन्सान हैं। हमारे बीच ऐसे लोग होते हैं जो ग़लत–सलत बात करते हैं इसी प्रकार यह भी कर रहे हैं। अतः इनसे धोखा न खाओ। यह जादूगरी कर रहे हैं। यह जो नये–नये प्रकार की बातें करते हैं अर्थात चमत्कार दिखाते हैं कि यह अल्लाह की ओर से उनको मिला है, हालांकि ऐसा नहीं है। वास्तव में यह जादू और धोखा है। यह हमको मूर्ख बनाने के लिए धोखा दे रहे हैं। इसीलिए उनके चक्कर में पड़ने का प्रयास न करो। क्या तुम लोग उनके पास जादू देखने जाते हो, जबकि तुम समझदार व दूरदर्शी हो। अर्थात बजाय इसके कि वे लोग नबी (ईश्वर के संदेष्टा) की बात मानें और सुनें, वे इससे बेख़बर हैं और जो लोग कुछ सुनने के लिए तैयार भी होते हैं वे उनको बहकाते हैं कि जादूगर के चक्कर में क्यों पड़ते हो। जाओ अपना काम करो।

इसके बाद रसूलुल्लाह (स0अ0) के द्वारा कहा गया कि हमारा पालनहार सारी बातों को जानता हैं। कौन क्या कहना चाहता है उसको भी जानता है, क्योंकि किसी बात के कहने में उसका उद्देश्य भी छिपा हुआ होता है। क्योंकि यदि उद्देश्य न हो तो उसको ''कहना'' नहीं बल्कि ''बकवास'' का नाम दिया जाएगा। अर्थात ऐसे शब्द जिनके अर्थ नहीं होते, अर्थात जब तक कहने का कोई तात्पर्य न हो तब तक उसको 'कहना' नहीं कहते। इसीलिए कुरआन मजीद में जगह–जगह आता हैः

''कुल'' (कहो) अर्थात इस बात को समझो, इस हक़ीक़त को पहचानो, वास्तव में इस आदेश में कर्म भी छिपा हुआ है। सूरह इख़्लास में कहा गयाः

''कहो ऐ नबी कि अल्लाह एक है।'' इसका अर्थ यह है कि इस बात को समझो भी। यह नहीं कि केवल मुंह से शब्द निकाल दो बल्कि इसके अर्थ पर भी विचार करो।

अर्थात उपरोक्त आयत में कहा गया कि मुश्रिकीन (बहुदेववादियों) से रसूलुल्लाह (स0अ0) ने कहाः आसमान व ज़मीन में जो कुछ कहा जा रहा है अल्लाह उसको जानता है। कोई कुछ कहे अल्लाह से छिपा हुआ नहीं है। तुम लोग अल्लाह को धोखा नहीं दे सकते। बाद में अपनी बात बदलकर यह कहो कि हमने तो इसलिए कहा था या यूं कहा था या हमने यह नहीं कहा था, ऐसा कुछ नहीं है। अल्लाह को सब मालूम है कि कौन क्या कह रहा और कौन क्या दिखाना चाहता है। कहना भी करने की तरह होता है। किसी को गाली मुंह से दी जाए तो वह कुछ करने की ही भांति है, जिसका असर सामने वाले पर पड़ता है। इसलिए कोई यह कहे कि हमने तो केवल अपने मुंह से कहा है, इसे हम नहीं मानेंगे, ऐसा नहीं है, बल्कि आपने जो कहा है उसपर विचार कीजिए, क्योंकि अल्लाह तआला जानता है जो कुछ आसमान व ज़मीन में है। जहां भी कुछ कहा जाए, अल्लाह को सब मालूम है। तुम चुपके–चुपके लोगों को बहकाओगे, प्रोपगन्डे की कोशिश करोगे, यह कहोगे कि नबी की बातें ग़लत है, तो यह कुछ भी अल्लाह से छिपा हुआ नहीं है। हर चीज़ उसको मालूम है। क़यामत (महाप्रलय) के दिन जब हिसाब–किताब होगा तो पता चलेगा और उस हिसाब का समय क़रीब आ चुका है। हिसाब के दिन क़रीब आने के दोनों अर्थ हो सकते हैं, एक यह कि क़यामत क़रीब है दूसरे यह कि मृत्यु का समय निकट है। मृत्यु के बाद आदमी अपने हिसाब–किताब के लिए अल्लाह के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। वहां मनुष्य को किसी भी प्रकार के कर्म करने का अधिकार नहीं होता। न तो वह तौबा (क्षमा याचना) कर सकता है और न ही किसी तरह से माफ़ी मांग सकता है और न अपनी ग़लती का किसी भी प्रकार से सुधार कर सकता है। जब वह दुनिया से चला जाएगा तो जो कुछ उसने किया है वही उसके पास होगा, वहां कोई नई बात करना उसके अधिकार में नहीं। वहां तो केवल हिसाब देना होगा।

अल्पसंख्यकों को सुदृढ़ कार्यप्रणाली का निर्माण करने की आवश्यकता

मौलाना असरारुल हक़ क़ासमी (सांसद, राज्यसभा)

उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की शानदार जीत के बाद अब मुख्यमंत्री के पद के लिए हिन्दुत्व के ध्वजवाहक योगी आदित्यनाथ का चुनाव एक कटु सत्य एवं विशेषतयः मुसलमानों के लिए स्पष्ट संदेश है कि अब उन्हें होश में आ जाना चाहिए। पहले उत्तर प्रदेश के मुसलमानों ने संदेश दिया कि उनकी राजनीतिक सूझ–बूझ समाप्त हो चुकी है। वे किसी भी हालत में एक नहीं हो सकते तो साफ़ है कि बिखरे हुए समुदायों का जो भविष्य होता है, अब उसने उनके दरवाज़े पर भी दस्तक दे दी है। यह सब कैसे हो गया, इसपर एक सरसरी निगाह डालना ज़रूरी है। चुनाव से पहले बीजेपी की ओर से तीन सौ सीटें हासिल करने का दावा अवश्य किया जा रहा था लेकिन यह बात सभी जानते हैं कि चुनावी राजनीति में ऐसे दावे आम तौर पर विरोधी पार्टियों के मनोबल को तोड़ने के लिए किये जाते हैं। बीजेपी को वास्तव में कितनी सीटों की उम्मीद थी यह तो पार्टी की आलाकमान ही जाने जो अन्तिम चरण से पहले–पहले अत्यधिक नर्वस नज़र आ रहे थे। फिर भी सच्चाई यह है कि 403 सीटों में से 312 पर जीत ने केवल बड़े–बड़े राजनीतिक पण्डितों को ही नहीं बल्कि स्वयं बीजेपी को भी हैरान कर दिया है।

समाजवादी पार्टी ने चुनाव से ठीक पहले अन्दरूनी झगड़े का शिकार होकर कांग्रेस का हाथ थामा लेकिन यह रणनीति ऐसी उल्टी पड़ी कि चुनाव ही हाथ से निकल गया। बहुजन समाज पार्टी ने बहुत ही चतुराई से चुनाव में अंधाधुंध मुस्लिम उम्मीदवार उतारे और जामा मस्जिद, दिल्ली से लेकर लखनऊ में शियों के बड़े आलिमों (धर्मगुरुओं) से समर्थन भी प्राप्त कर लिया, लेकिन बड़ी हार उसका मुक़द्दर बनी। यूपी में इन दोनों राजनीतिक पार्टियों की हार भी कम हैरान करने वाली नहीं थी। बहरहाल जीत तो जीत होती है और जीतने वाला बधाई का पात्र होता है। जीतने वाला यह भी बताता है कि जीत उसको किन ख़ूबियों और पॉलिसियों के कारण मिली। बीजेपी के नेता भी दावा कर रहे हैं कि यह प्रधानमंत्री के विकास के एजेण्डे की जीत है, विकास का डंका ज़ोर–शोर से बजा है। प्रधानमंत्री मोदी ने जिस प्रकार से ग़रीबों, कमज़ोरो, मज़दूरों और किसानों के लिए विकास के काम किये हैं, उसका परिणाम सामने आया है। सरकार के इम्पॉवरमेंट के क़दम को लोगों ने पसंद किया है। किसी भी प्रकार के भेदभाव से परे, जात–पात से ऊपर उठकर केन्द्र सरकार की पॉलिसियों ने यह जीत दिलायी है। केन्द्र ने ''सबका साथ सबका विकास'' के फ़ार्मूले पर काम किया जिससे सभी वर्गों की उन्नति हुई है। अल्पसंख्यकों के लिए भी सरकार ने जो दिल खोलकर काम किये हैं, उनके कारण पार्टी ने शानदार जीत हासिल की है। लोगों ने प्रधानमंत्री मोदी के कामों को पसंद किया है। यह भी कहा जा रहा है कि यह जीत नोटबन्दी के फ़ैसले का रिफ्रेन्डम है अर्थात नोटबन्दी के फ़ैसले को सबने पसंद किया है क्योंकि इसके वांछित परिणाम प्राप्त कर लिये गये हैं।

उत्तर प्रदेश में बीजेपी ने जो शानदार जीत हासिल की है, वह किसी विकास या उन्नति के कामों का परिणाम नहीं है। यह सारे दावे सफेद झूठ बताए जाते हैं, क्योंकि लगभग तीन वर्षों के समय में मोदी और उनकी सरकार ने अपना कोई वादा पूरा नहीं किया है और न ही सबका साथ और सबका विकास के एजेण्डे पर कोई बड़ा काम किया है। मंहगाई और बेराज़गारी दूर नहीं हुई बल्कि उनमें बढ़ोत्तरी हुई है। उन्नति का सफर आगे नहीं बढ़ा बल्कि सभी महत्वपूर्ण विभागों की उन्नति रुक सी गई है। नोटबंदी के परिणाम से बहुत से उधोग बंद होने की कगार पर पहुंच चुके हैं। सैंकड़ो मज़दूर और कर्मचारी अपना रोज़गार गवां चुके हैं। यदि केन्द्र सरकार ने ग़रीबों, मज़दूरों और किसानों के हित में व उनकी उन्नति के लिए काम किये हैं जिनके कारण यूपी में उनकी जीत हुई तो फिर पंजाब में क्यों हार हुई जहां पर वे सत्ता के भागीदार थे।

कड़वी सच्चाई यह है कि बीजेपी को कम से कम उत्तर प्रदेश में जो जीत मिली है, वह उसके विवेक के कारण है

जिसका आरम्भ उसने चुनाव से बहुत पहले कर दिया था।

नोटबन्दी के क्रम में सबसे पहली बात तो यह थी कि इसका निशाना उत्तरप्रदेश का चुनाव जीतना था न कि काला धन, जाली नोट, भ्रष्टाचार और आतंकवाद को समाप्त करना या कैशलेस अर्थव्यवस्था की स्थापना करना। इस बात में कोई संदेह नहीं कि भारत की राजनीतिक पार्टियों की फ़न्डिंग संदेहास्पद है क्योंकि उनको जो चन्दा मिलता है उसका कोई ठोस हिसाब–किताब नहीं होता। नोटबन्दी से पहले बीजेपी ने किसी तरह से अपना फ़न्ड तो ठीकठाक कर लिया, लेकिन दूसरी राजनीतिक पार्टियों को इसका अवसर नहीं प्राप्त हो सका और आर्थिक रूप से उनकी कमर टूट गयी। बीजेपी की तुलना में समाजवादी–कांग्रेस और बहुजन समाजवादी पार्टी साधन नहीं जुटा सकी। चुनाव में मीडिया का रोल बहुत महत्वपूर्ण होता है। आजकल अधिकतर मीडिया हाउस पक्षपाती हो गए हैं। वैचारिक मतभेद के कारण या फिर किसी दबाव में या फिर किसी और कारण से बीजेपी के समर्थन में प्रोपगन्डे को ही अपनी पत्रकारिता का कर्तव्य समझ रहे हैं। इस चुनाव में भी इसी प्रकार से बहुत से मीडिया हाउसों ने बीजेपी के पक्ष में माहौल बनाया। इसकी शुरूआत एक हिन्दी अख़बार ने की जिसने एक्ज़िट पोल पर पाबन्दी के बावजूद पहले चरण के बाद ही एक्ज़िट पोल को आनलाइन जारी कर दिया था जिसमें योजनाबद्ध तरीक़े से बीजेपी की जीत की भविष्यवाणी कर दी गई थी ताकि आगे के छः चरणों के मतदाताओं को यह संदेश दिया जा सके कि अपना वोट किसी और को देकर बर्बाद नहीं करना। इसके साथ–साथ साफ़ तौर पर यह भी महसूस किया गया कि बहुत से सीनियर पत्रकार, बहुत से अनुभवी सम्पादक बजाय इसके कि परिणाम की प्रतीक्षा करते, न्यूज़ चैनलों पर आकर बीजेपी की जीत की भविष्यवाणी करते रहे और इस प्रकार चुनाव के अगले चरणों के मतदाताओं को प्रभावित करने का काम करते रहे। तीसरी बात जो सबसे ज़्यादा लाभप्रद और सफल रही वह यह थी कि बहुत ही सफलतापूर्वक स्वयं प्रधानमंत्री मोदी, पार्टी अध्यक्ष अमित शाह की चुनाव में भागीदारी थी। उन्होंने कब्रिस्तान–शमशान, रमज़ान–दिवाली और लैपटाप को हिन्दु–मुस्लिम और जात–पात में बांटकर राज्य के हिन्दु मतदाताओं को समाजवादी पार्टी व अन्य राजनीतिक दलों के ख़िलाफ़ भड़काने के साथ–साथ सामूहिक रूप से सभी हिन्दुओं में सभी अल्पसंख्यकों के ख़िलाफ़ अत्यधिक नफ़रत पैदा कर दी। बीजेपी ने चुनाव में तो इसकी फसल काट ली लेकिन आने वाले समय में नफ़रत के पौधे को एक विशाल वृक्ष बनने से रोकने की आवश्यकता है, वरना इसके नुक़सान केवल अल्पसंख्यकों को ही नहीं अपितु पूरे देश को उठाने पड़ेंगे।

अजमेर दरगाह, समझौता एक्सप्रेस, मक्का मस्जिद धमाके जैसे आतंकवादी हमलों में मुख्य आरोपी असीमानन्द का चुनाव के बीच में जब बीजेपी नर्वस नज़र आ रही थी, अजमेर धमाके के आरोप से साफ़ बरी हो जाना भी पार्टी के यूपी जीतने की योजनाबद्ध कार्यप्रणाली का एक हिस्सा मालूम होता है। इससे हिन्दु मतदाताओं को शायद कोई संदेश देने का प्रयास किया गया है। और इसी प्रकार अन्तिम चरण के मतदान से एक दिन पहले मध्यप्रदेश में पैसेंजर ट्रेन में ट्यूब लाइट के एक धमाके को आतंकवादी घटना का नाम दे दिया गया और हमारी ''जांच एजेंसियों'' ने उसके ''मुजरिम'' सैफ़ुल्लाह को लखनऊ में ढूंढकर एक ''इन्काउन्टर'' में मार दिया। इससे भी यह संदेश जाता है कि मुसलमान चाहे बेगुनाह ही क्यों न हो, बख़्शा नहीं जाएगा, इसी प्रकार घेरकर मारा जाएगा। जम्मू–कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्लाह विशेषतयः यूपी में बीजेपी की इस जीत से इतने हताश नज़र आ रहे हैं कि उन्होंने सभी धर्मनिरपेक्ष राजनीतिक पार्टियों को 2019 के लोकसभा चुनाव को भूलकर 2024 के चुनाव की तैयारी करने की राय दे डाली है। शायद वे यह भूल गये कि यूपी में बीजेपी की आंधी स्वतः नहीं चली बल्कि पार्टी और संघ की विचारधारा से लबरेज़ चालों के द्वारा चलाई गई है और इस प्रकार की चालें देर तक नहीं टिकतीं और न ही हमेशा सफल होती हैं। केवल उमर अब्दुल्लाह को ही नहीं सभी धर्मनिरपेक्ष पार्टियों और नागरिकों को हताशा के इस कवच से जल्दी निकलना होगा, ताकि 2019 की तैयारी की जा सके। जब बीजेपी को इस बार के पंजाब की भांति केन्द्र में सत्ताविरोधी लहरों का सामना करना होगा और देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में भी कई बार चोट लगने के बावजूद यूपी की धर्मनिरपेक्ष पार्टियों और मतदाताओं ने जिनमें अल्पसंख्यक भी शामिल हैं, कोई सबक़ नहीं सीखा है। उनका बिखराव भी बीजेपी की जीत का महत्वपूर्ण कारण है। इस ओर सदृढ़ कार्यप्रणाली का निर्माण करने की अत्यधिक आवश्यकता है।

सहाबा के त्याग के कुछ नमूने

मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी (रह०)

एक बार एक व्यक्ति रसूलुल्लाह (स0अ0) की सेवा में अत्यधिक थका–हारा उपस्थित हुआ। चेहरे से भूखा व परेशान लगता था। उसने कहा कि हज़रत! मेरे घर का हाल बहुत ख़राब है अर्थात कुछ खाने को नहीं है। रसूलुल्लाह (स0अ0) ने तुरन्त अज़वाज़–ए–मुतहरात (रसूलुल्लाह (स0अ0) की पत्नियां) के घरों में कहला भेजा कि इस–इस तरह का एक मेहमान है, लेकिन हर घर से यही जवाब आया कि पानी के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। अधिकतर रसूलुल्लाह (स0अ0) के घर का यही हाल रहता था। तीन–तीन चांद (महीने) बीत जाते थे और रसूलुल्लाह (स0अ0) के घर में सिवाए पानी और खजूर के खाने को कुछ नहीं रहता था। इसके बाद रसूलुल्लाह (स0अ0) ने सहाबा (सहचरों) से कहाः ''कोई व्यक्ति है तुममें से जो इनका अतिथि सत्कार करे?'' एक अन्सार सहाबी खड़े हुए और कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल (स0अ0)! मैं उपस्थित हूं एवं खुशी के साथ उन्हें अपने घर ले गए और बीवी से कहाः यह रसूलुल्लाह (स0अ0) के मेहमान हैं, क्या घर में इनकी सेवा–सत्कार की कोई व्यवस्था है। बीवी ने कहाः आज तो कुछ नहीं है सिवाय छोटे बच्चों के खाने के। उन्होंने कहाः यह अल्लाह के रसूल (स0अ0) के मेहमान हैं, अतः ऐसा करो कि बच्चों को बहलाकर सुला दो और उन बच्चों का जो कुछ खाना हो वह मेहमान के सामने लाकर रख दो। हम दोनों भी उनके साथ बैठ जाएंगे, लेकिन तुम चिराग़ बुझा देना। उस समय ऐसा एहसास बाक़ी रखना कि हम खा रहे हैं, लेकिन खाना कुछ नहीं, सारा खाना उन्हीं मेहमान को खिला देना। अतः ऐसा ही हुआ और मेहमान ने पेट भरकर खाना खा लिया। मेज़बान और उनके परिवार वालों ने भूखे पेट रात बिता दी। सुबह जब रसूलुल्लाह (स0अ0) के दरबार में उपस्थित हुए, तो अल्लाह के रसूल (स0अ0) ने आप (रज़ि0) का स्वागत किया और कहाः आओ, आज तुम्हारी इस अदा को अल्लाह ने बहुत पसंद किया है। इसी पर यह आयत भी नाज़िल (अवतरित) हुई हैः

"वे अपनेआप पर दूसरों को वरीयता देते हैं, चाहे ख़ुद को कितनी ही ज़रूरत क्यों न हो।"

यह है वह वरीयता जो उन्होंने दी और अल्लाह को उनकी यह अदा पसंद आ गयी। हालांकि उन्होंने जो किया वह अतिथि सत्कार था कि उस अजनबी व्यक्ति को खाना खिलाया, लेकिन क्योंकि उनको भी आवश्यकता थी और घर के बच्चों को भी ज़रूरत थी, लेकिन उन सबको उन्होंने बहलाकर सुला दिया और स्वयं भूखे रहकर रात बिता दी। इसलिए अल्लाह को यह अदा (कार्य) ज़्यादा पसंद आयी।

हज़रत सुहैल बिन साद कहते हैं कि एक औरत रसूलुल्लाह (स0अ0) की सेवा में अपने हाथ से बुनकर एक चादर लेकर आयी। रसूलुल्लाह (स0अ0) ने उसको स्वीकार किया। क्योंकि उस समय रसूलुल्लाह (स0अ0) को चादर की आवश्यकता थी इसलिए रसूलुल्लाह (स0अ0) खुशी–खुशी वह उपहार स्वीकार कर लिया और उसको पहनकर बाहर आए। एक सहाबी (सहचर) ने रसूलुल्लाह (स0अ0) को वह चादर पहने हुए देखा तो कहाः हज़रत! यह चादर बहुत अच्छी है, यह मुझे पहना दीजिए, आप (स0अ0) ने कहाः बेशक तुमने सही बात कही है, फिर थोड़ी देर रसूलुल्लाह (स0अ0) सभा में उपस्थित रहे और उसके बाद घर को प्रस्थान कर गए और चादर उतार कर उनको दे दी।

अल्लाह के रसूल (स0अ0) का यह नियम नहीं था कि आपसे कोई कुछ मांगे तो आप उसे वापस कर दें। लेकिन उन सज्जन को लोगों ने टोका कि अल्लाह के बन्दे देखा तो करो, रसूलुल्लाह (स0अ0) को उस चादर की आवश्यकता थी। आपने वह चादर पहन रखी थी, तुमने उसको मांग लिया। उसने कहाः मैंने भी लालच में मांगी है, इसलिए नहीं मांगी कि मैं ख़ुद पहनूं। मांगने का उद्देश्य यह है कि मैं इसको कफन बनाना चाहता हूं। ऐसा कहा जाता है कि जब उनकी मृत्यु हुई तो वही चादर उनका कफ़न बनी अर्थात उसने भी अच्छी नियत से आप (स0अ0) से उसको मांगा था कि यह हज़रत के शरीर से लगी हुई बरकत वाली चादर है, यदि यह मुझे मिल जाए तो मैं इसे अपना कफ़न बना लूं।

हज़रत अबू मूसा (रज़ि0) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने कहाः अश्अर क़बीले के जो लोग हैं उनका अजीब नियम हैं। जब यह लोग किसी जिहाद (संघर्ष) में

होते हैं, वहां कोई परेशानी आ जाए या जब अपने शहर में होते हैं और वहां उनका ग़ल्ला कम हो जाए या उनके लोगों को कोई परेशानी हो जाए तो यह अजीब उपाय करते हैं, वह यह है कि जिसके घर में जो कुछ होता है, वह सब ले आता है और इस तरह हर कोई अपना–अपना सामान लाकर एक जगह एकत्र कर लेता है, फिर यह लोग आपस में सारा सामान बराबर–बराबर बांट लेते हैं। रसूलुल्लाह (स0अ0) इस क़बीले वालों के इस काम पर इतना ख़ुश हुए कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने कहा कि यह लोग मुझसे हैं और मैं इनसे।

अश्अर क़बीले के लोग आपस में इस तरह बंटवारा करते थे कि कोई अन्तर बाक़ी न रह जाए। जितना ग़ल्ला होता वह सब एकत्र कर लेते, इसमें किसी का ज़्यादा होता, किसी का कम, यह बात संभव थी कि ज़्यादा ग़ल्ला जिनके पास होता वे कुछ हिस्सा अपने पास ही रोक लेते, किन्तु यही त्याग की भावना है और अपने उन भाइयों को वरीयता देना है जिनके पास कुछ नहीं है। उनका यह मानना था कि यदि हमारे पास कुछ है तो हम सब मिल बांटकर खाएंगे, यह सब हमारे ही घर के लोग हैं।

इससे पता चलता है कि स्वार्थ नहीं होना चाहिए। इन क़बीले वालों के अन्दर स्वार्थ नाम की चीज़ नहीं थी। लेकिन आजकल देखें कितना स्वार्थ है हमारे समाज में। हद तो यह है कि यदि पड़ोसी भूखा मर रहा है तब भी उसको नहीं देंगे। कितने ऐसे लोग हैं जो खाना फेंक देते हैं, लेकिन जो ज़रूरतमन्द हैं उनको दे दें या ग़रीबों में बांट दें, ऐसा नहीं करेंगे। लोग पैसे ग़लत जगह खर्च कर देते हैं, लेकिन ऐसा नहीं करेंगे कि जिनको पैसों की आवश्यकता है, उनको खोज कर दें दे। इसी तरह अपने घरों को सजाने और उनको ख़ूबसूरत बनाने में जोकि फिज़ूलख़र्ची है, हज़ारों रुपये लगा देते हैं, लेकिन उनका रिश्तेदार भूखा है, कई बार उसको भीख मांगने की नौबत आ जाती है, उस मजबूर व्यक्ति पर पैसा नहीं लगाएंगे। वास्तव में यह स्वार्थ के विभिन्न रूप हैं, जो कि आज बढ़ते ही चले जा रहे हैं। आजकल समाज के बिगाड़ के जो कारण हैं, उनमें से एक कारण यह भी है कि हर व्यक्ति स्वार्थी होता चला जा रहा है। हर एक का मानना यह है कि बस हमको मिल जाए, दूसरों को मिले या न मिले। हमको फ़ायदा पहुंच जाए, दूसरों को हो या न हो। हमको आराम मिल जाए दूसरों को मिले या न मिले।

त्याग व सुहानुभूति के बारे में यह बात भी ध्यान में रहे कि यह उसी समय है जब सामने वाले को कोई आवश्यकता हो। यदि कोई व्यक्ति ख़ुद पैसेवाला है और दूसरा व्यक्ति ऐसा है जिसको अल्लाह ने उसकी तुलना में अधिक दे रखा है, उसको भी कोई परेशानी नहीं है, तो अब वह व्यक्ति जिसके पास आवश्यकतानुसार माल व दौलत है, उसकी यह इच्छा है कि उस व्यक्ति की दौलत में से उसको कुछ हिस्सा प्राप्त हो जाए ताकि वह भी उनके बराबर हो जाए, यह ग़लत है। यह चीज़ केवल उसी समय है जब आवश्यकता हो। जैसे प्रसाधन हैं, सब खाली हैं, लेकिन उसके बाद भी आप रुक जाएं और किसी से कहें कि मैं रुका हुआ हूं, पहले आप जाइये। साफ़ सी बात है कि यह कोई त्याग नहीं हुआ। त्याग तो जब हुआ कि जब एक ही प्रसाधन हो और परेशानी हो तब स्वयं को रोका जाए, वरना त्याग नहीं है। फिर तो एक–दूसरे को परेशान करना है, जो कि सही नहीं है और स्वयं को परेशान करना भी सही नहीं है। इस्लाम में अपने को राहत पहुंचाने का भी आदेश है। कई बार इसको लेकर भी लापरवाही हो जाती है। जैसे आप संतुष्ट हैं और दूसरा व्यक्ति भी पूरी तरह संतुष्ट है किन्तु आप ज़बरदस्ती अपनी चीज़ें उठाकर उसे दे दें और अपनी जगह उसको दें दे, या आप इसी प्रकार का कोई दूसरा काम करें तो यह आवश्यक नहीं। इस्लाम में यह आदेश ही नहीं है कि आप अपने को तकलीफ़ दें। यह बात तो उस समय होगी जब उसको तकलीफ़ पहुंच रही हो। अब आप तकलीफ़ उठाकर उसको राहत पहुंचाए तो यह त्याग है, वह त्याग नहीं है। वह तो बिना किसी कारण स्वयं को तकलीफ़ देना है, जिसका शरीअत (जीवन यापन का इस्लामी तरीका) में आदेश नहीं है। आदेश तो यह है कि अपने भाई को राहत पहुंचाओ और दूसरों को भी। पिछली लाइनों में यह बात आ चुकी है कि जिस प्रकार दूसरों का धन–दौलत सम्मान योग्य है, उसी प्रकार अपना धन–दौलत भी सम्मान योग्य है। जिस प्रकार दूसरों का मान–सम्मान व इज़्ज़त सम्मान योग्य है उसी प्रकार हमारे स्वयं का भी मान–सम्मान सम्मान करने योग्य है। हमको स्वयं अपनी रक्षा करनी चाहिए। मान–मर्यादा का ध्यान रखना चाहिए। इसी प्रकार शरीर का भी ध्यान रखना आवश्यक है। राहत व सुकून हर मनुष्य का अधिकार है। यदि कोई मनुष्य स्वयं को आराम व राहत देता है तो इसमें कोई हर्ज नहीं। बस सीमा न लांघे।

पिछले अंक से क्रमशः

एकेश्वरवाद क्या है?

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

रसूलुल्लाह (स0अ0) ने अपनी मृत्यु से पहले इस आशंका को अनुभूत कर लिया कि कहीं आपको आपकी मृत्यु के बाद ख़ुदाई का दर्जा न दे दिया जाये। अतः यह बात कही कि जैसे ईसा इब्ने मरियम के साथ उनके मानने वालों ने किया, इस तरह तुम न करना। इस बात को हमेशा ध्यान में रखने की आवश्यकता है कि आप (स0अ0) बन्दे हैं तो कहा जाए कि आप (स0अ0) अल्लाह के बन्दे हैं। यह (बन्दा) ऐसी विशेषता है जो अल्लाह को बहुत प्रिय है। बन्दा सबसे ज़्यादा अल्लाह से जिस चीज़ से क़रीब होता है, वह अल्लाह की बन्दगी (उपासना) है, उसकी अब्दियत (भक्ति) है। आप देखिए कुरआन मजीद के अन्दर रसूलुल्लाह (स0अ0) का जहां सबसे श्रेष्ठ वर्णन है, वहां आपके लिए कौन सा शब्द प्रयोग किया गया है। मेराज (रसूलुल्लाह (स0अ0) की आसमान पर जाने की घटना) से बढ़कर कौन सा स्थान होगा। सब समझते हैं कि अल्लाह ने रसूलुल्लाह (स0अ0) को बुलाया, वहां उनसे बात की और नमाज़ उपहार स्वरूप भेंट की और अल्लाह ही जाने अल्लाह ने क्या–क्या भेंट किया। वहां पर रसूलुल्लाह (स0अ0) के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ वह ''अब्द'' अर्थात ''बन्दा'' का शब्द है:

''पाक है वह ज़ात जो अपने बन्दे को रातों–रात मस्जिद–ए–हराम से मस्जिद–ए–अक़्सा ले गई।'' (सूरह अलइस्राः 1)

सोचने वाली बात है कि यदि अल्लाह तआला चाहता तो यहां कोई दूसरा शब्द प्रयोग कर लेता। हज़ारों शब्द रसूलुल्लाह (स0अ0) के लिए प्रयोग किये जा सकते थे, लेकिन ''बन्दा'' का शब्द ही प्रयोग करके अल्लाह ने यह दिखाया कि आपको इतना कुछ दिया गया, अल्लाह के क़रीब किया गया, आपसे बढ़कर न दुनिया में कोई पैदा हुआ है और न कोई होगा। सारे उपकार आप पर हुए हैं और होंगे, क़यामत तक होते रहेंगे। आपको वह स्थान मिलेगा जो किसी को नहीं मिलेगा अर्थात ''मक़ाम–ए–महमूद'' लेकिन ध्यान रहे कि आप (स0अ0) अल्लाह के बन्दे हैं और रसूलुल्लाह (स0अ0) के बन्दे होने का यही पूर्ण रूप है जिसने उनको यह स्थान दिलाया है। रसूलुल्लाह (स0अ0) का पूरा जीवन इसी पूर्ण बन्दगी (भक्ति) का प्रदर्शन है। इसलिए 'तौहीद के अक़ीदे' (एकेश्वरवाद की आस्था) को पूर्ण और सदृढ़ करने के लिए इस वास्तविकता को समझना अतिआवश्यक है कि अल्लाह के रसूल (स0अ0) का जो स्थान है, वह रसूलुल्लाह (स0अ0) का है और अल्लाह का जो स्थान है, वह अल्लाह ही का है। अल्लाह रब (पालनहार) है बाक़ी सब बन्दे (सेवक) हैं। यद्यपि बन्दों में जिसको सबसे श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है वह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (स0अ0) को प्राप्त है। इसलिए जगह–जगह आपको इस बात की स्पष्टता मिलेगी अल्लाह तआला का जो स्थान है, वह उपासक का है, अल्लाह (ईश्वर) का है। कुरआन व हदीस में इसको बहुत अधिक नुमायां किया गया है, ताकि किसी प्रकार की भ्रान्ति न उत्पन्न होने पाये।

कुरआन शरीफ़ में रसूलुल्लाह (स0अ0) के द्वारा अहल–ए–किताब (यहूदी/ईसाइ) से यह कहा गया कि हममें और तुममें एक प्रकार तौहीद (एकेश्वरवाद) की भागीदारी है, लेकिन जो अधूरी तौहीद (एकेश्वरवाद) है तुम उसको पूरा कर लो। अल्लाह के साथ किसी को शामिल न करो और हममें से कुछ लोग कुछ लोगों को अपना पालनहार व उपासक न बना लें। पालनहार बनाने का मतलब यही है कि पूरी तरह हर काम में भागीदार बना लिया जाए। वे जो कह रहे हैं ऐसा प्रतीत होता है कि वह आख़िरी बात है। वे जो चाहे करें। यह बात अल्लाह के रसूल (स0अ0) के लिए ही नहीं, बल्कि बहुत से लोग हैं जो अपने–अपने ज्ञानियों व धर्मगुरुओं के लिए भी यह बात समझते हैं। उनका यह मानना है कि वे जो कह दें बस वही धर्म है। ऐसा नहीं है, ज्ञानी जो कह दें वह दीन नहीं है, ज्ञानी वह कहते हैं जो धर्म है। यदि कोई ज्ञानी ऐसा हो जो अपनी ओर से कोई बात कह दे तो स्पष्ट है कि उसकी बात नहीं मानी जाएगी। खुली हुई बात है कि पांच समय की नमाज़ फ़र्ज़ है। यह हर व्यक्ति जानता है। हर बच्चा और जाहिल भी जानता है कि पांच समय की नमाज़ फ़र्ज़ है। अब यदि कोई आलिम या ज्ञानी कहे कि पांच समय की नमाज़ फ़र्ज़ नहीं है, फज्र की नमाज़ माफ़ कर दी जाएगी। चार समय की नमाज़ है तो बच्चा भी चीख़कर कहेगा कि मियां! तुम झूठ बोलते हो, नमाज़ पांच समय की है, उसके बारे में अल्लाह तआला कुरआन मजीद में कहता है। हर जगह लिखा हुआ है। सारी दुनिया जानती

और मानती है। आप कौन होते हैं इसमें फेरबदल करने वाले। इसके बारे में एक बच्चे को भी यह कहने का अधिकार है। अब यदि कोई यह कहे कि नहीं यह ज्ञानी हैं, यह जो कह रहे हैं वह सही है तो यह एक प्रकार का शिर्क (बहुदेववाद) है। जैसा कि आयत में कहा गया कि हममें से कोई दूसरे को रब न बना ले कि वे जो चाहें करें और जो चाहें कहें, हम उसके उत्तरदायी है, जहां यह बात पैदा होगी वहां फेरबदल का दरवाज़ा खुल जाता है। हदीस शरीफ़ में कहा गया है:

"इस इल्म (ज्ञान) के हर नस्ल में ऐसे न्यायप्रिय व संयमी वारिस होंगे जो इस दीन से जाहिलों की दो प्रकार की व्याख्याओं को, झूठे लोगों के ग़लत इन्तिसाब व दावे को और मुबालगा पसंद लोगों के फेरबदल को दूर करते रहेंगे।"

हदीस शरीफ़ में फेरबदल का दरवाज़ा खुलने से संबंधित इसी अतिश्योकित व मुबालग़े की ओर इशारा किया गया है। यह मुबालग़ा प्रेम व सम्मान में होता है। ध्यान रहे कि उलमा (ज्ञानियों) का सम्मान व महत्व अपनी जगह पर, लेकिन वे धर्ममार्ग बनाने वाले नहीं हैं। वे जो चाहें कह दें ऐसा नहीं है। वे अल्लाह की किताब और रसूलुल्लाह (स0अ0) के तरीक़े के एक प्रकार से प्रतिनिधि होते हैं। वे अपनी ओर से नहीं कहते। जो अपनी ओर से कहेगा वह भटकेगा। यदि कोई कहता है कि तुम्हारे लिए नमाज़–रोज़ा माफ़ तो उसका इस्लाम धर्म से कोई संबंध नहीं। आज यही हो रहा है। बहुत से पीर देहातों में जाकर कहते हैं कि इतने पैसे देकर कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) कर लो, तुम्हारे रोज़े माफ़ किये जाते हैं, बस हमें दे दो, हमारी जेब भरते रहो, तुम्हारी नमाज़ माफ़ है, हमें हर नमाज़ का सौ रुपये दे दो। इस प्रकार वे रुपये बटोर रहे हैं। रमज़ान भर की पूरी नमाज़ माफ़ करा दी और पन्द्रह–बीस हज़ार रुपये एक से ले लिए। वास्तविकता यह है कि यह सब पैसे बटोरने के तरीक़े हैं और यह कोई आज की नई बात नहीं है, बल्कि यहूदी उलमा (ज्ञानी) ने किया। ईसाइयों में जो ज्ञानी थे उनसे भी इस प्रकार की ग़लतियां हुईं। यहूदियों ने विशेष रूप से यही किया। वे मनमानी करते थे। जहां गये वहां कहा कि तुम बताओ तुमको किस प्रकार का फ़तवा (आदेशपत्र) चाहिए, जो तुम्हें चाहिए उसके हिसाब से फ़ीस अदा कर दो, तुम्हें फ़तवा मिल जाएगा। यह वे बुरे ज्ञानी (उलमा) हैं जिनसे उम्मत (समुदाय) को बहुत नुक़सान पहुंचा है और पहुंच रहा है। यह पूरे समुदाय को गुमराह करते हैं। यह जो हमारी जनता है जो ज़्यादा नहीं जानती। वे मोटी–मोटी बातें तो जानते हैं। पांच समय की नमाज़ फ़र्ज़ है सब जानते हैं। अब यदि कोई कहे कि नमाज़ माफ़ की जाती है तो उनको ठिठक जाना चाहिए, यह नहीं कि किसी ने कह दिया तो तुरन्त मान लें। इस्लाम धर्म में यह किसी का स्थान नहीं।

अहले किताब (यहूदी/ईसाई) और मुसलमानों बीच अल्लाह के कलिमे पर एकत्र होने की दावत देने के बाद कहा गया कि यदि वे नहीं मानते तो बस दावत दे दो। अपनी बात पहुंचा दो। फिर नहीं मानते तो तुम इस बात को कह दो कि तुम गवाह रहना कि हम तो मानने वाले हैं। हम अपना सर झुकाने वाले हैं। कोई मानता है यह उसके लिए भलाई की बात है और यदि नहीं मानता तो अल्लाह ने उसके लिए सत्यमार्ग नहीं रखा है, लेकिन हमारा कर्तव्य यह है कि हम इसी रास्ते पर चलते रहें।

नबियों (संदेष्टाओं) की प्रतिष्ठा

"किसी मनुष्य से यह नहीं हो सकता कि अल्लाह ने उसको किताब व हिकमत (तत्वदर्शिता) व नुबूव्वत दी हो और फिर वह लोगों से कहता फिरे कि अल्लाह के बजाए मेरे बन्दे बन जाओ बल्कि (वह तो यही कहेगा कि) अल्लाह वाले बन जाओ। चूंकि तुम किताब की शिक्षा देते और जैसे तुम स्वयं उसको पढ़ते रहे हो।"

इस आयत में संदेष्टाओं को विशेष रूप से सम्बोधित किया जा रहा है। उनका काम यह है कि वे एकेश्वरवाद का निमन्त्रण देते हैं। वे एक अल्लाह की ओर बुलाते हैं। किसी भी मनुष्य को यह शोभा नहीं देता कि जिसको अल्लाह ने किताब दी हो और अल्लाह तआला ने उसे संदेष्टा बनाया हो और शासन भी दिया हो, निर्णय की शक्ति दी हो, तत्वदर्शिता प्रदान की हो अर्थात उसको नुबूव्वत मिली हो अल्लाह ने उसको संदेष्टा बनाया हो, उसको सत्ता प्रदान की हो, बुद्धिमत्ता की बातें बतायी हों, फिर यह संभव नहीं है कि वह कहे अल्लाह को छोड़कर मेरे बन्दे बन जाओ। वह इसकी दावत देगा? उसको तो इसीलिए भेजा गया कि वह एक अल्लाह की ओर बुलाए। वह एकेश्वरवाद की दावत दे। यह हो ही नहीं सकता कि वह कहे कि मेरे बन्दे बन जाओ और अल्लाह को छोड़कर मुझे अपना रब और उपासक मान लो, वह तो यह कहेगा कि तुम जो किताब पढ़ते–पढ़ाते हो, ...(शेष पेज 20 पर)

जुमा की फ़ज़ीलत और उससे संबंधित कुछ आदेश

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

जुमे की दिन की हदीसों में बहुत ज़्यादा फ़ज़ीलत आयी हैं। जुमे की नमाज़ का हुक्म देने के लिए कुरआन मजीद में एक पूरी सूरह ''सूरह जुमा'' के नाम से है और उसकी फ़ज़ीलत बयान करते हुए हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि0) कहते हैं:

''नबी करीम (स0अ0) ने फ़रमायाः जिन दिनों पर सूरज निकलता है, सबसे बेहतर दिन जुमा का है, इसी दिन आदम (अलैहिस्सलाम) की पैदाइश हुई, उसी दिन उनको जन्नत में दाख़िल किया गया, इसी दिन जन्नत से निकाला गया और क़यामत जुमा के ही दिन आएगी।'' (मुस्लिम)

जुमा के दिन एक वक़्त ऐसा है जिसमें दुआएं कुबूल होती हैं, इसीलिए हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि0) कहते हैं, नबी करीम (स0अ0) ने फ़रमायाः

''जुमे के दिन एक घड़ी ऐसी है जो बहुत ही अल्पावधि (मुख़्तसर) की है, जो किसी मोमिन बन्दे को नसीब हो जाए और उसमें ख़ैर की दुआ करे तो अल्लाह तआला उसकी दुआ ज़रूर सुनता है। (मुत्तफ़िक़ अलैह)

भलाई और दुआ की कुबूलियत का यह वक़्त अस्ल में अल्लाह तआला ने छिपा कर रखा है इसीलिए बिल्कुल तय वक़्त नहीं बताया जा सकता है, लेकिन हदीसों में दो वक़्तों में इसका मुमकिन होना बताया गया है। इन दोनों वक़्तों में इस बात के होने की अधिक संभावना है। एक वक़्त के बारे में हज़रत अबू मूसा अश्अरी (रज़ि0) की रिवायत है कहते हैं:

''मैंने नबी करीम (स0अ0) को जुमे की घड़ी के बारे में कहते हुए सुना कि यह घड़ी इमाम के मेम्बर पर बैठने से लेकर ख़त्म होने तक है।'' (मुस्लिम) कुबूलियत का यह वक़्त ज़्यादा सही हदीसों से साबित है। लेकिन इस वक़्त दुआ दिल ही दिल में करनी चाहिए, इसलिए कि ज़बान से दुआ और बातचीत इत्यादि की मनाही है। (शामी)

दूसरा वक़्त अस्र की फ़र्ज़ नमाज़ से लेकर सूरज डूबने तक का है। इसके बारे में तिरमिज़ी में यह रिवायत है; हज़रत अनस (रज़ि0) से रिवायत है कहते हैं कि नबी करीम (स0अ0) ने कहाः

''वह वक़्त जिसमें दुआ के कुबूल होने की जुमा के दिन उम्मीद होती है, उसको अस्र के बाद से सूरज डूबने तक तलाश करो।''

अल्लामा शामी रज़क़ानी के हवाले से लिखते हैं: बयालिस क़ौल (कथन) में से यह दो क़ौल सही हैं और यह वक़्त उन दोनों के दरमियान रहता है, लिहाज़ा उन दोनों वक़्तों में दुआ ज़्यादा से ज़्यादा करना चाहिए। (शामी)

जुमे के दिन दरूदः जुमे के दिन दरूद शरीफ़ ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ने का हुक्म दिया गया है, इसीलिए हज़रत अबूदरदा (रज़ि0) से रिवायत है कि नबी करीम (स0अ0) ने कहाः ''जुमे के दिन मेरे ऊपर ज़्यादा से ज़्यादा दरूद भेजा करो, इसलिए कि इसका मुशाहदा (अनूभूत) किया जाता है। फ़रिश्ते उसका मुशाहदा करते हैं और जब कोई मेरे ऊपर दरूद भेजता है तो उसका दरूद मेरे सामने पेश किया जाता है, यहां तक कि वह दरूद भेज चुके। मैंने सवाल कियाः क्या (आपकी) वफ़ात (मृत्यु) के बाद (भी ऐसा ही रहेगा) आपने जवाब दियाः

''अल्लाह तआला ने ज़मीन पर हराम कर दिया है कि वह नबियों के बदन को खाए तो अल्लाह के नबी ज़िन्दा हैं और उनको रिज़्क़ दिया जाता है।''

जुमे के दिन मौतः यद्यपि मौत एक ऐसी चीज़ है जिस पर इन्सान का अधिकार नहीं, लेकिन हदीस में आता है कि जुमे के दिन की मौत बड़ी भलाई की बात है। इसीलिए हज़रत अब्दुल्लाह बिन इब्ने उमर व इब्ने आस (रज़ि0) से रिवायत है कि नबी करीम (स0अ0) ने फ़रमायाः

''जिस मुसलमान की मौत जुमे के दिन या जुमे की

रात (यानि जुमेरात और जुमे के दिन के बीच की रात) को होती है तो अल्लाह तआला उसको क़ब्र के फ़ित्ने (सवाल व अज़ाब) से बचा लेता है।'' (मुसनद अहमद, तिरमिज़ी)

जुमे के दिन गुस्ल व जुमे का एहतिमामः जुमे के दिन गुस्ल (स्नान) करने, सफ़ाई–सुथराई की पाबन्दी करने, इत्र लगाने और जुमा की नमाज़ पढ़ने पर हदीसों में ज़्यादा से ज़्यादा से फ़जीलत आई हैं। एक हदीस में हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि नबी करीम (स0अ0) ने फ़रमायाः

''जो शख़्स भी जुमे के दिन गुस्ल करता है और हर संभव पाकी अपनाता है, अपना तेल लगाता है, या अपने घरवालों का इत्र इस्तेमाल करता है, फिर निकलता और दो (बैठे हुए) लोगों के बीच भेदभाव नहीं करता (यानि ज़बरदस्ती घुसकर नहीं बैठता) फिर जो कुछ नसीब में है, उतनी नमाज़ पढ़ता है, फिर जब इमाम ख़ुत्बा देता है तो ख़ामोशी अपनाता है तो उस जुमा और अगले जुमा के बीच उसके सारे गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं। (बुख़ारी)

मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अबूहरैरा (रज़ि0) की रिवायत में यह बढ़ोत्तरी भी है कि और तीन दिन की मग़फ़िरत कर दी जाती है।

जुमे के दिन गुस्ल करना हनफ़ियों के निकट सुन्नत है, इसलिए कि हज़रत समरा बिन जुन्दब (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमायाः जिसने जुमा के दिन वुज़ू किया, उसने बहुत बेहतर अमल किया और जिसने गुस्ल किया तो गुस्ल अफ़ज़ल है। (अबूदाऊद, तिरमिज़ी, नसाई)

मस्जिद जाने की फ़ज़ीलतः हदीसों में इसका भी ज़िक्र है कि जुमे की तैयारी सुबह ही से होनी चाहिए और जल्दी से जल्दी मस्जिद पहुंच जाना चाहिए। जितनी जल्दी मस्जिद जाएगा उतना ही ज़्यादा अज्र व सवाब पाएगा। इसीलिए बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अबूहरैरा (रज़ि0) की रिवायत है फ़रमाते हैं; नबी करीम (स0अ0) ने कहाः

''जब जुमे का दिन होता है तो फ़रिश्ते मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े होकर क्रमवार पहले आने वालों के नाम लिखते हैं और सबसे पहले आने वाले की मिसाल उस शख़्स की तरह है जो गाय की कुर्बानी करे, फिर दुम्बे की तरह, फिर मुर्ग़ की तरह, फिर अन्डे की तरह, फिर जब इमाम (ख़ुत्बे के लिए) निकलता है तो वह फ़रिश्ते अपने सहीफ़े (काग़ज़) लपेट देते हैं और ख़ुत्बा सुनते हैं।

सूरह कहफ़ की तिलावतः जुमे के दिन सूरह कहफ़ पढ़ने का भी एहतिमाम करना चाहिए, ज़्यादा बेहतर यह है कि दिन के शुरूआती हिस्से में पढ़े, अगर न हो सके तो दिन के किसी हिस्से में पढ़ ले। (शामी)

बहुत सी हदीसों में इसकी फ़ज़ीलतें आयीं हैं। इसीलिए एक हदीस में है कि नबी करीम (स0अ0) ने कहाः

''जो शख़्स जुमे के दिन सूरह कहफ़ की तिलावत करेगा, अल्लाह तआला उसके लिए दोनों जुमे के बीच रोशनी फ़रमा देगा।'' (किताबुल मसाएल)

एक दूसरी हदीस में है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने कहाः ''जो शख़्स जुमे के दिन सूरह कहफ़ पढ़ता है तो वह आठ दिनों तक हर फित्ने से बचा रहता है। (यहां तक कि) यदि दज्जाल निकल आए तो उससे भी महफ़ूज़ कर दिया जाएगा। (किताबुल मसाएल)

बिना किसी कारण जुमा छोड़ने पर चेतावनीः जिस तरह जुमे की नमाज़ की फ़ज़ीलतें बयान की गईं हैं, इसीलिए बिना किसी वजह के जुमा छोड़ने पर सख़्त चेतावनी भी सुनाई गईं हैं। इसीलिए मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में हज़रत इब्ने उमर व हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि0) से रिवायत है कि दोनों फ़रमाते हैं कि हमने नबी करीम (स0अ0) को मेम्बर पर फ़रमाते सुना कि लोग जुमा की नमाज़ छोड़ने से बाज़ आ जाएं, वरना अल्लाह तआला उनके दिलों पर मोहर लगा देगा, फिर वह यक़ीनी तौर पर ग़ाफ़िलों में ही गिना जाएगा। (मुस्लिम)

और हज़रत अबूजाद (रज़ि0) से रिवायत है कहते हैं कि नबी करीम (स0अ0) ने फ़रमायाः

''जो शख़्स सुस्ती की वजह से तीन जुमे छोड़ दे तो अल्लाह तआला उसके दिल पर मोहर लगा देता है। (यानि फिर उसका दिल मुर्दा हो जाता है और भलाई को कुबूल करने की योग्यता ख़त्म हो जाती है) (अबूदाऊद, तिरमिज़ी, इब्ने माजा)

और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि0) कहते हैं कि नबी करीम (स0अ0) ने फ़रमायाः ''जो बिना कारण जुमा छोड़ता है, उसको ऐसी किताब में मुनाफ़िक़ लिख देता है जिसमें बदलाव नहीं होता। (मिश्कात)

सीरियन शरणार्थियों का आंखों देखा हाल

मुफ़्ती अबू लबाबा शाह मन्सूर

सुना तो था कि आंखों देखी और होती है, सुनी–सुनाई और। लेकिन देखने और सुनने में इतना अन्तर होता होगा और इतना हृदयविदारक एवं कष्टदायी अन्तर होगा, यह सोचा भी नहीं था। समझ में नहीं आता कि बात कहां से शुरू की जाए। सीरिया के शरणार्थियों की हृदयविदारक पीड़ा का वर्णन किया जाए और दिल में मानवता का दर्द रखने वाले लोगों को बताया जाए कि आप (स0अ0) की पाक–मासूम बेटियां जो कर्बला से बचकर सीरिया आ गई थीं, उन पर क्या बीत रही है?

या तुर्की के अन्सार (अन्सार सहाबा की वंशज) का साहस, उदारता व दानशीलता और महानता का वर्णन किया जाए जिसने मदीना के अन्सार (मुहम्मद साहब के सहचरों) की याद ताज़ा कर दी है? या दुनिया भर में मानवाधिकार का वावेला करने वाली और हैवानों के ग़म में मरी जाने वाली दोगली संस्थाओं की वास्तविकता प्रकट की जाए जिनमें से एक भी.....मैं दोहराता हूं.....एक भी यहां मौजूद नहीं है। या फिर मुस्लिम शासकों की उदासीनता और हैसियत रखने वाले मुसलमान भाइयों की बेबसी का रोना रोया जाए जो सीरिया के पीड़ित मुसलमानों पर ख़तरों के बादल मंडलाते व गरजते–बरसते देखकर भी होंठ सिये हुए हैं??? शासकों ने ज़बानों पर ताले डाले हुए हैं और जनता आंखें बन्द करके अपनी बारी आने से पहले तक सुकून की घड़ियां गुज़ार रही है। सीरिया की सीमाओं के पार अन्तराष्ट्रीय शक्तियां अलग अपना खेल खेल रही हैं। रूस की समस्या यह है कि खाड़ी देशों में अमरीका के पास कई अड्डे मौजूद हैं, उसके पास केवल सीरिया का न्यूअल बेस है। वह उसे किसी भी हाल में नहीं छोड़ना चाहता, चाहे चीन के साथ समझौता ही क्यों न करना पड़े। ईरान की समस्या यह है कि चौदह सौ साल बाद उसे बाज़ी अपने पक्ष में पलटने का मौक़ा मिला है जिसे वह किसी भी क़ीमत पर खोना नहीं चाहता।

अमरीका की समस्या यह है कि वह इस पूरे खेल में ग्रेटर इस्राईल की तरफ़ क़दम बढ़ाने के लिए सीरिया का बंटवारा करना चाहता है और उसे कमज़ोर करना चाहता है।

वे सब मिलकर यह भी चाहते हैं कि न रहे सीरिया के पास गोलान की पहाड़ियां और न बजे फ़िलिस्तीनी हस्तक्षेप की बांसुरी। अतः सीरिया का मुसलमान दो तरफ़ से पिस रहा है। सीरिया के मुसलमानों पर वह समय आ गया है कि शेख़ अज़्लुद्दीन अब्दुस्सलाम और शेख़ अहमद रिफ़ाई के सम्मानित परिवार की वे औरतें जिनको कर्बला के मैदानों ने न देखा था, आज रेहानिया, अरफ़ा और ग़ाज़ी ऐन्ताब के कैम्पों में खुले आसमान के नीचे, ज़ैतून के तेल और ज़ाएर के चूरन के साथ जीवन जीने पर मजबूर हैं। तुर्की की सीमा पर अजीब ईमानी व अन्सारी कैफ़ियतें हैं। ख़ुदा की क़सम! पाठकों अजीब कैफ़ियतें है! जिस क़स्बानुमा छोटे से शहर में यह फ़क़ीर बैठा यह लाइनें लिख रहा है, स्थानीय आबादी नब्बे हज़ार है, जबकि शरणार्थियों की संख्या एक लाख बीस हज़ार हो चुकी है। सीमा के दोनों ओर की ख़बरें बता रही हैं कि अल्लाह न करे हल्ब (एलेप्पो) के बाद उदलुब के पतन की घटना शायद घटित होने वाली है। तब हल्ब (एलेप्पो) के वे शरणार्थी जो उलदुब चले गये थे, उनका रेला जब उलदुब वालों के साथ आएगा तो उनकी सेवा के बोझ का क्या दृश्य होगा? इसको सोचकर यक़ीन करिये रोंगटे खड़े हो जाते हैं। जिस प्रकार शरणार्थी दोनों ओर से पिस रहे हैं उसी तरह अन्सार भी नॉटो और फॉटो दोनों के बीच घिरे हुए हैं।

एक ओर करेंसी गिरकर केवल आधे मूल्य की रह गई है तो दूसरी ओर विजय के लिए दरकार साधनों की कई गुना ज़्यादा ज़रूरत निकट समय में पड़ने वाली है।

ख़ुशी की बातें दो हैं: एक यह कि जो वर्ग इस्लाम पसंद सही विचार वाला है, उनमें मुक़ाबला हो रहा है कि कौन सा शहर मदद के अधिक से अधिक कंटेनर भेजता है जबकि गोलनिस्ट और सेक्यूलर और क़ौमपरस्त लोग उर्दगानी दीवार को कमज़ोर होता देखकर एक और धक्के की तैयारी किये हुए हैं।

दूसरी यह कि उर्दगान के तैयार किये हुए कार्यकर्ताओं की संस्था, उपाय और ख़ामोश मुस्तैदी देखकर हैरत होती है कि किस मिट्टी से उनको बनाया गया है? आप यक़ीन करेंगे कि शरणार्थी कैम्पों में एक लाख रोटियां प्रतिदिन पक रहीं हैं उसकी निगरानी करने वाला केवल एक व्यक्ति है .....(शेष पेज 16 पर)

न रोज़गार, न कर्ज़ वृद्धि, न निवेश

पी चिदम्बरम (पूर्व वित्त मंत्री)

भारत–पाकिस्तान सीमा पर जारी तनाव और अर्थव्यवस्था में आई भारी बाधाओं के बीच प्रधानमंत्री मोदी की अगुवाई वाली सरकार का आधा कार्यकाल पूरा हो चुका है। ऐसे मैं यह स्वभाविक अवसर है कि सरकार के कामकाज की, उसके वादों की और अर्थव्यवस्था की स्थिति की पड़ताल की जाए।

मैंने औसत नागरिकों की आर्थिक चिंताओं की सूची तैयार की और फिर उनमें से ऐसी चिंताओं को एक–एक कर अलग कर दिया जो दूसरी चिंताओं से कहीं कम महत्वपूर्ण थीं। आख़िर में सूची में तीन चिंताए रह गयीं और अब इनमें से किसी को ख़ारिज करना मुश्किल था। मेरे दृष्टिकोण में हर–एक के मन में जो सबसे बड़ी चिंताए घर करती जा रही हैं:

1. रोज़गार,
2. ऋण वृद्धि,
3. निवेश।

अतीत में इस बात पर ग़ौर किया गया था किन्तु स्थिति नहीं बदल सकी। मगर आज रोज़गार और क़र्ज़ की मांग बढ़ रही है। भविष्य आज और आने वाले दिनों में किये जाने वाले निवेश पर निर्भर है।

रोज़गार विहीन विकास

कोई भी रोज़गार शुरूआत करने के लिये अच्छा प्रस्थान बिन्दु होता है। तकरीबन सभी लोग या तो कहीं काम में लगे हुए हैं या फिर स्वरोज़गार कर रहे हैं। जो लोग कहीं नौकरी करते हैं या काम करते हैं, उन्हें वेतन या पारिश्रमिक मिलता है और स्वरोज़गार करने वाले आय अर्जित करते हैं। पिछले तीस महीने के दौरान रोज़गार स्रजन से संबंधित डाटा निर्मम और हताश करने वाला है। इसे व्यक्त करने के लिये मेरे पास एक पूर्व वित्त मंत्री से बेहतर शब्द नहीं है:

नये रोज़गार स्रजन को निरन्तर चोट पहुंचेगी और इसका संबंध आर्थिक विकास से टूट जाएगा.....हम राजनीतिज्ञों के लिये यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि आम आदमी को सिद्धांतो से कुछ लेना–देना नहीं है। उसे नतीजे चाहिये और यदि हम लोगों को पर्याप्त संख्या में रोज़गार के अवसर मुहैया कराने में नाकाम रहते हैं तो उन्हें हताशा होगी। 'यह शब्द पूर्व वित्त मंत्री यशवंत सिन्हा के हैं', उनके बेटे जयन्त सिन्हा अभी थोड़े समय पहले नागरिक उड्डयन राज्यमंत्री बनाए जाने से पहले दो वर्ष से कुछ अधिक समय तक वर्तमान सरकार में राज्यमंत्री थे। रोज़गार विहीन विकास ने भारतीय अर्थव्यवस्था के दुनिया में बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में सबसे तेज़ी से आगे बढ़ने के दावे को नुक़सान पहुंचाया है। एक अनुमान के मुताबिक़ हर वर्ष डेढ़ करोड़ नये लोग रोज़गार की कतार में खड़े हो जाते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के चुनावी वादों में से एक वादा जिसने लाखों युवा पुरूषों और महिलाओं को आकर्षित किया था, वह यह था कि यदि उनकी पार्टी सत्ता में आ जाती है तो वह हर वर्ष दो करोड़ रोज़गार का स्रजन करेंगे। इस बात के स्पष्ट प्रमाण मौजूद हैं कि पिछले दो वर्षों के दौरान भारत रोज़गारविहीन विकास का गवाह बना:

आठ श्रम सघन क्षेत्रों में 2009 में 12 लाख 50 हज़ार रोज़गार स्रजन (जबसे श्रम ब्यूरो की शुरूआत हुई) होने की तुलना में 2014 में कुल 4 लाख 90 हज़ार और 2015 1 लाख 35 हज़ार रोज़गार ही स्रजित हुए।

जनवरी से सितम्बर, 2015 में ठेके से संबंधित रोज़गार में 21000 की गिरावट आयी, जबकि जनवरी–सितम्बर 2014 में इसमें 1,20,000 की वृद्धि दर्ज की गयी थी।

केयर रेटिंग के एक अध्ययन के मुताबिक़ 2014–15 में रोज़गार वृद्धि तक़रीबन शून्य–सिर्फ़ 0.3 फ़ीसदी हुई।

मैन्यूफ़ैक्चरिंग कम्पनियों में 2014–15 दौरान रोज़गार स्रजन नकारात्मक ढ़ंग से –5.2 प्रतिशत था, जबकि 2013–14 में यह 3.2 फ़ीसदी दर्ज किया गया था।

रोज़गार स्रजन आसान नहीं है। अनुमानों के मुताबिक़ 2005–2012 के दौरान डेढ़ करोड़ रोज़गार सृजित किये गये थे। इसके बावजूद लाखों लोग बेरोज़गार रह गये। स्थिति और बदतर हुई है। रोज़गार के मोर्चे पर सरकार बुरी तरह नाकाम हुई है।

न्यून कर्ज़ वृद्धि

अगली चिंता कर्ज़ वृद्धि से संबंधित है। स्वरोज़गार या फिर रोज़गार स्रजन का कर्ज़ की उपलब्धता से क़रीब का संबंध है। एम. एस. एम. ई. (विशेष रूप से सूक्ष्म और लघु) बड़ी संख्यां में रोज़गार का स्रजन करते हैं। कर्ज़वृद्धि में कमी का तुरन्त प्रभाव नये रोज़गार में कमी या फिर कुछ क्षेत्रों में रोज़गार ख़त्म हो जाने के रूप में दिखता है। नवंबर 2016 को साल दर साल कर्ज़ वृद्धि दर सिर्फ़ 8.25 प्रतिशत थी। कर्ज़वृद्धि में कमी सीधे औधोगिक उत्पादन, सूचकांक (आईआईपी) और निर्यात में परिलक्षित होती है। आईआईपी और निर्यात सुस्त हुआ है। सरकार इस सवाल का जवाब देने में पूरी तरह नाकाम रही है कि आख़िर पिछले बीस वर्षों में अभी कुल कर्ज़ वृद्धि दर सबसे कम क्यों है?

निवेश की हालत बदतर

और अन्त में निवेश। निवेश को आंकने का सबसे अच्छा पैमाना है सकल अचल पूंजी सृजन (जी एफ़ सी एफ़) में वृद्धि। 2014–15 तथा 2015–16 के दौरान यह क्रमशः 4.85 फ़ीसदी तथा 3.89 फ़ीसदी रही, जोकि न्यून है और यह आईआईपी में सीधे परिलक्षित होती है। सीएसओ द्वारा जीडीपी को लेकर किये गये आख़िरी अनुमान के मुताबिक़ 2016–17 की पहली तिमाही में जीएफ़सीएफ़ पिछले वर्ष की तुलना में 3.1 फ़ीसदी सिकुड़ जाएगा। सेन्टर फ़ॉर मानीटरिंग इंडियन इकोनॉमी के मुताबिक़ जुलाई–सितम्बर, 2016 के दौरान, 2015 की इसी अवधि की तुलना में निजी क्षेत्र की नयी परियोजनाओं की घोषणा में 21 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गयी है। बड़े उधोग की कर्ज़ की वृद्धिदर पिछले दो वर्षों के दौरा क्रमशः 5.33 प्रतिशत और 4.24 प्रतिशत रह गयी जो कि पिछले कई वर्षों की तुलना में काफ़ी कम है। वित्त मंत्री लगातार निजी क्षेत्र से निवेश का आग्रह कर रहे हैं मगर, या तो उनके उपदेशों को कोई सुन नहीं रहा है या फिर बैंक कर्ज़ देने की स्थिति में नहीं है।

इसलिए मध्यावधि की स्थिति यह है कि कोई रोज़गार सृजन नहीं हो रहा है, कर्ज़वृद्धि दर की स्थिति बेहद कम है और निजी निवेश बदतर स्थिति में है। इन तीन मुख्य क्षेत्रों में नाकाम रहने के बावजूद सरकार दावा करती है कि वह पास हो गयी।

शेषः सीरियन शरणार्थियों का आंखों देखा हाल

.....और इतना चौकस है कि मेहमानों के जूते अन्दर जाने से पहले सही जगह रखवाने से लेकर उनका परिचय और चरित्र हर चीज़ पर उसकी बाज़ की नज़र है।

भारी–भरकम कन्टेनरों की खेप आ जाए या नये कैम्प के लिए ज़मीन तैयार करके नये ख़ेमों की पहले से तैयार हो, इतनी ख़ामोशी और तेज़ रफ़्तारी से काम होता है कि समझ से बाहर है।

प्रशिक्षण की यह मानवीय व्यवस्था किसने बनायी है? इस बीमार मनुष्य में नवचेतना का जागरण किसने किया है?

ऐसा प्रतीत होता है कि यह सेवक किसी लम्बे प्रशिक्षण से गुज़र कर एक मज़बूत सांचे में ढल चुके हैं। मानवता के शुभचिन्तकों में से न तो यहां कोई अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है और न ही एन.जी.ओज़, उल्टा उन सहायता केन्द्रों पर दो बार हमला करवाया जा चुका है। इसलिए वहां की सुरक्षा व्यवस्था बहुत ही चाक–चौबन्द है जहां किसी को क़रीब फटकने की आज्ञा नहीं। लेकिन जैसे ही उन्हें पता चलता है कि यह पहला मुल्ला पत्रकार है जिसे इस जगह क़दम रखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है तो जिस तेज़ी से उनकी कठोरता नर्मी में परिवर्तित हुई है, वह दृश्य भी देखने लायक़ होता है। देश के अन्दर धमाके, देश के बाहर से बढ़ता दबाव और पनपती साज़िशें, उदलुब के पतन का ख़तरा, सहायता केन्द्रों और क़ाफ़िलों पर हमले का भय, कोई चीज़ उनको नये शरणार्थियों के लिए व्यवस्था करने से रोक सकती है न पहले से आए शरणार्थियों के लिए रिहाइश, स्वास्थ्य और शिक्षा की उच्चस्तरीय व्यवस्था करने से।

अल्लाह की क़सम! अगर केवल कुछ उन यतीमख़ानों का वर्णन करूं जिन्हें अब तक देखने का मौक़ा मिला तो मुझे यक़ीन है कि इन सुविधाओं का पाठक विश्वास ही नहीं करेंगे जो इन बेसहारा बच्चों को इस नज़रिये के तहत उपलब्ध करायीं गईं हैं कि यतीम का पालन–पोषण केवल अल्लाह की रहमत आने का मार्ग है। ख़ासकर सीरिया के यतीम कि कोई किसी नबी की औलाद है, कोई किसी सहाबी का वंशज और कोई ख़ुदा जाने किस वली की औलाद?

रसूलों पर ईमान

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

''हज़रत उमर बिन अलख़त्ताब रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने कहाः ईमान यह है कि तुम ईमान लाओ अल्लाह पर, और उसके फ़रिश्तों पर, और उसकी किताबों पर, और उसके रसूलों पर, और आख़िरत के दिन पर और अच्छी–बुरी तक़दीर पर।''

फ़ाएदाः रसूल या नबी अर्थात संदेष्टा दुनिया में अल्लाह के पैग़ाम को पहुंचाने के ज़िम्मेदार होते है। रसूल और नबी में अन्तर यह होता है कि नबी केवल ग़ैब (परोक्ष) की उन बातों को बताता है, जो अल्लाह तआला उसको वह्य (ईशवाणी) के द्वारा बताए, जबकि रसूल उसके अलावा एक सम्पूर्ण शरीअत और जीवन यापन के सदृढ़ नियम भी प्रस्तुत करता है। कुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने उन सभी नबियों व रसूलों पर ईमान (आस्था रखना) लाना आवश्यक घोषित कर दिया है, जिनको अल्लाह तआला ने विभिन्न युगों में विभिन्न समुदायों में भेजा।

मनुष्य की प्रकृति में यह बात शामिल है कि उसको अपनी धन–दौलत की चिन्ता हो। वह इस बात पर विचार करे कि इस संसार का चलाने वाला कौन है। इस संसार में उसके आने का उद्देश्य क्या है। उसके अन्दर जो क्षमताएं पायी जाती हैं, वह स्वयं उसकी हैं या किसी के द्वारा उसे दी गईं हैं। वह किसी के अधीन है या स्वतन्त्र है। और उसके इस जीवन के बाद उसके साथ कैसा व्यवहार किया जाने वाला है।

निसंदेह यह वे चीज़ें हैं जो हर इन्सान के दिल की आवाज़ हैं। यदि उनका जवाब तत्वदर्शियों या साहित्यकारों से पता लगाया जाए तो निसंदेह वे भी केवल ख़्याली बातों से ही काम लेंगे, क्योंकि उनका जवाब वही व्यक्ति दे सकता है जो इस दुनिया के आगे की भी जानकारी रखता हो और उससे उसी प्रकार परिचित हो जैसे दुनिया की कलाओं के माहिर अपनी कला से परिचित होते हैं।

संदेष्टाओं का विशेष गुण यही है कि इस बारे में उनका ज्ञान विश्वस्नीय है। वे केवल अल्लाह की ज़ात व उसके गुणों पर विचार करने को नहीं कहते, बल्कि इसके साथ यह दावा भी होता है कि हम इस दुनिया के आगे की भी ख़बर रखते हैं। हम अल्लाह तआला की बातें सुनते हैं, और उससे बातचीत का सौभाग्य भी पाते हैं। अर्थात नबियों (संदेष्टा) की ज़ात ऐसी है कि वे अल्लाह के आदेश से आलम–ए–ग़ैब (परोक्ष) की उन चीज़ों का अनुभव, जिनका मनुष्य के संज्ञान में आना आवश्यक है, बिल्कुल ऐसे ही करते हैं, जैसे हर व्यक्ति इस दुनिया की चीज़ों का अनुभव करता है।

पैग़म्बरों की इस विशेषता के साथ दूसरी महत्वपूर्ण बात यह भी है कि वे किसी दूसरे ग्रह के प्राणी नहीं होते, बल्कि इन्सानों में ही से एक इन्सान होते हैं। यद्यपि उनपर अल्लाह की बातें प्रत्यक्ष रूप से अवतरित होने के कारण उनका स्थान मनुष्यों से अत्यधिक श्रेष्ठ हो जाता है। अतः हर मनुष्य के लिए आवश्यक है कि वह अपने प्रश्नों का हल उनके जीवन में खोजे। उनके संदेशों पर ईमान लाए अर्थात विश्वास करे, क्योंकि यह मनुष्यों में हर प्रकार से पूर्ण व मुकम्मल हैं और उन्हीं में के एक इन्सान हैं। जो उनकी पैरवी करेगा वह सफल होगा।

कुरआन व हदीस से मालूम होता है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) से पहले उन संदेष्टाओं का एक लम्बा सिलसिला रहा है, जिनकी लगभग संख्या एक लाख चौबीस हज़ार बतायी जाती है। उनमें से पांच हैंः हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम), हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम), हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम), हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम), हज़रत मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कुरआन मजीद में यह बात साफ़ कर दी गई है कि सभी पैग़म्बरों पर ईमान लाना ज़रूरी है, यद्यपि रसूलुल्लाह (स0अ0) पर ईमान लाने के साथ यह भी ज़रूरी है कि आपको आख़िरी नबी माना जाए। हर नबी का सरदार माना जाए और दूसरे नबियों की तरह आपको भी बशर समझा जाए। इसके अलावा आप पर ईमान लाने के साथ आपकी पैरवी को भी इस्लाम का एक अनिवार्य भाग माना जाए, वरना केवल एक रस्म के तौर पर रसूलुल्लाह (स0अ0) पर ईमान लाना आख़िरत (परलोक) में कामयाब होने के लिए पर्याप्त नहीं है। अल्लाह तआला कहता हैः

''बस नहीं आपके रब की क़सम! वे उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकते, जब तक कि वे अपने झगड़ों में आपको फ़ैसला करने वाला न बना लें।''

इस्लाम और पश्चिम

ISLAM vs WEST

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

284 ईसवी में ''ड्यूक्लेट्यानियस'' (Diocletianus), रोमन साम्राज्य के शहंशाह, ने साम्राज्य की दृढ़ता और गृहयुद्ध से सुरक्षा के मद्देनज़र रोमन साम्राज्य को व्यवस्थानुसार दो भागों में बांट दिया, जो ''पूर्वी रोमन साम्राज्य'' (Eastern Roman Empire) और ''पश्चिमी रोमन साम्राज्य'' (Western Roman Empire) कहलाता था।

पूर्वी और पश्चिमी का यह बंटवारा भौगोलिक आधार पर भी किया गया। भूमध्य सागर में सिसली नामक द्वीप के दक्षिण में ''कैप्सोरेलो'' (Cape Sorello) और त्यूनेशिया की ''कैप बोन'' (Cape Bone) के बीच लगभग 160 किलोमीटर चौड़ा पानी का रास्ता बन जाता है, जिसके कारण प्राकृतिक रूप से उसका बंटवारा पूर्वी व पश्चिमी समुद्रों में हो जाता है। पूर्वी भूमध्यसागर के तट पर स्थित देश ''पूर्वी यूरोप'' और पश्चिमी भूमध्यसागर के तटीय देश ''पश्चिमी यूरोप'' या केवल ''पश्चिम'' कहलाते हैं। जिनमें पुर्तगाल, स्पेन, फ़्रांस, इटली, जर्मनी और इनसे सटे हुए छोटे–छोटे देश और ब्रिटेन उपमहाद्वीप आते हैं।

दसवीं शताब्दी में पश्चिम के सभी क्षेत्र कैथोलिक चर्च के अधीन थे। चर्च ने अपने अधीनस्थ क्षेत्रों में एक ऐसे समाज का निर्माण किया जो पूरी तरह से ईसाई और धार्मिक व सांसारिक मामलों में चर्च के आदेशों का कठोरता से अनुपालन करने वाला था। सभ्यता व संस्कृति के इतिहास में इसी को ''पश्चिमी समाज'' एवं ''पाश्चात्य संस्कृति'' के नाम से जानते हैं। इस समाज में चर्च ही क़ानून व व्यवहारिक व्यवस्था लागू करने का ज़िम्मेदार था। वही सभ्यता व संस्कृति का रक्षक एवं उसमें फेरबदल करने व उसको रद्द करने का पूर्ण रूप से अधिकारी था।

चर्च ने जो समाज प्रस्तुत किया था उसका संबंध पुरानी यूनानी एवं रोमी सभ्यता से था। इन दोनों सभ्यताओं ने अपनी विरासत के रूप में जो राजनीतिक व्यवस्था, सामूहिक सिद्धान्त एवं ज्ञान व बुद्धिमत्ता की जो पूंजी छोड़ी थी, वही चर्च के हिस्से में आयी।

महान इस्लामी चिन्तक हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह0) के शब्दों में यूनान व रोम की सभ्यता व संस्कृति की विशेषताएं निम्नलिखित थीं:

(1) जिसको अनूभूत न किया जा सके उसका अविश्वस्नीय व संदेहास्पद होना। (2) विनम्रता और आत्मिकता की कमी। (3) सांसारिक जीवन का अनुसरण तथा सांसारिक लाभ के पीछे भागना। (4) राष्ट्रवाद में असंतुलन।

यदि हम इन अलग–अलग हिस्सों व पहलुओं को एक शब्द में पिरोना चाहें तो इसके लिए ''भौतिकवाद'' का शब्द पर्याप्त है।

चर्च ने यूनान व रोम की ''भौतिकवादी संस्कृति'' की सारी विशेषताओं व रूझानों को ईसाई धर्म के सांचे में ढालकर स्वयं से संबंधित कर लिया और फिर अपनी चरम सीमा के साथ इस रूप में प्रस्तुत किया कि उसमें सत्ता का घमन्ड और श्रेष्ठता की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती थी और इसमें वही सारी ख़राबियां भी शामिल थीं जिसने पहले यूनान और फिर रोम को पतन के द्वार तक पहुंचाया था।

अतः पश्चिमी समाज की मूलभूत विशेषताओं में भौतिकवाद के बाद श्रेष्ठता की भावना का तत्व अत्यधिक हावी था और यह भावना उसकी रग–रग में दौड़ रही थी जिसके आधार पर वह स्वयं को एक अलग और सभी मानवीय समाजों का सबसे श्रेष्ठ समाज समझता था। वह स्वयं को ईसाई दुनिया का एक हिस्सा अवश्य मानता था लेकिन उसकी नज़रों में बाक़ी सब कमतर थे। यही कारण है कि वह स्वयं को ''सभ्य संसार का स्वामी'' (Civilized Lord of the World) कहता था।

पश्चिमी समाज की निगाह में दूसरे समाजों के लिए कोई सम्मान नहीं था। रंग व नस्ल का भेद अपनी चरम सीमा पर था और यदि वह पश्चिमी व ईसाई न होता तो उसकी हैसियत जानवरों से ज़्यादा न होती थी। यदि सामाजिक शांति व सुकून की आवाज़ किसी ऐसे व्यक्ति के मुख से निकलती जो ईसाई न होता तो चर्च के इशारे पर सारी पश्चिमी ताक़तें उसके विरोध में खड़ी हो जातीं।

गर्व व घमन्ड की यह भावना उसकी वैचारिक शक्ति के साथ उसकी कर्मशक्ति पर भी छा चुकी थी जो कि अत्याचार के रूप में प्रकट होती थी। अतः जिस क़ौम व समुदाय से उसका वास्ता पड़ा उसने खून बहाकर, तबाही मचाकर, लूटपाट करके मक्कारी से व धोखा देकर अर्थात किसी न किसी रूप से उसे अपना अधीन बनाया और फिर लूट–खसोट के बाद तबाही तक पहुंचाकर ही दम लिया तथा दुनिया के जिस क्षेत्र में पहुंचे वहां के लोगों का जीवन

नर्क के समान कर दिया।

पश्चिमी समाज में श्रेष्ठता के भाव का मूल तत्व धार्मिक श्रेष्ठता का भी था। वहशी और हिंसक समुदायों के आक्रमणों के सामने चर्च मज़बूती से खड़ा रहा और फिर धीरे–धीरे वे समुदाय चर्च के सामने सर झुकाकर ईसाई धर्म में मिल गए और पूरी तरह से पश्चिमी समाज में रच–बस गए। पश्चिम में श्रेष्ठता की प्राप्ति के लिए ईसाई धर्म पर आस्था ही सबसे पहली शर्त थी और जो इस आस्था से वंचित था उसके लिए पश्चिमी समाज में कोई जगह नहीं थी।

पश्चिम केवल कुछ देशों पर आधारित एक साम्राज्य का नाम नहीं था अपितु पश्चिम एक सभ्यता व संस्कृति और जीवन यापन की एक प्रणाली का नाम था, जिसे दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यता होने पर गर्व और स्थायी और न समाप्त होने वाली सभ्यता होने का एहसास भी था। जिसकी बागडोर चर्च के हाथों में थी, जिसका आदेश पत्थर की लकीर था। यह जीवन यापन की एक ऐसी प्रणाली थी जो सदियों तक मनुष्यों के शरीर व आत्मा पर पूरी तरह से हावी और उनके विचारों तथा योग्यताओं व क्षमताओं का केन्द्र थी। अर्थात संसार में कोई मनुष्य या आकाशीय व्यवस्था ऐसी नहीं थी जो पश्चिम को चैलेंज कर सके।

लेकिन जब छठी शताब्दी में फ़ारान की चोटियों से इस्लाम रूपी सूर्य का उदय हुआ जो तो उसके पास जीवन यापन की एक ऐसी प्रणाली तथा उसके पहलू में एक ऐसी श्रेष्ठ सभ्यता व संस्कृति थी जिसकी बुनियादें अडिग थीं और जिसके नियमों में किसी पोप की दहशत के बजाय अल्लाह के डर की भावना कार्यरत थी। जो बाहरी शोरगुल व अन्दरूनी खोखलेपन से आज़ाद एक मज़बूद व सदृढ़ सभ्यता थी और जिसके बढ़ते हुए तेज़ क़दमों के सामने पश्चिम की सासें उखड़ने लगीं और फिर वह समय भी आया जब इस्लाम का सूरज अपने वेग की चरम सीमा पर पहुंचा और पश्चिम अपने इतिहास के "अंधकारमय युग" (Dark Ages) में पहुंच गया।

पन्द्रहवीं शताब्दी में जब पश्चिम ने करवट बदली और उसे अपने अस्तित्व को सहारा देने और स्वयं को फिर से मनवाने की चिन्ता सताने लगी तो उसको उन्हीं आधारों पर स्वयं का निर्माण करना पड़ा जो सदियों पहले इस्लाम ने प्रस्तुत किया था। पश्चिमी सभ्यता ने ताज़ा दम होकर तथा नये ख़ून व तैयारी के साथ व नई तकनीक व असलहों के साथ आक्रमण किया और अपने कपटी षडयंत्रों से दुनिया की निगाहों को हैरान व परेशान करता हुआ आधी दुनिया पर छा गया। लेकिन अफ़सोस की पश्चिमी सभ्यता की इस चेतना के समय इस्लाम मुक़ाबले से बाहर हो चुका था और उसके मानने वाले अपनी पिछली सफलताओं का जश्न मनाकर गहरी नींद में सो रहे थे और जब उनकी आंखें खुली तब तक उनका सबकुछ लुट चुका था और उनकी सासें भी पश्चिम की गुलाम हो चुकी थीं।

इस्लाम एक सदा रहने वाला धर्म है और उसकी शिक्षाएं सदाबहार और सदा नई रहने वाली हैं। इसलिए उसके पतन के समय में भी उसका सत्यमार्ग की ओर अग्रसर करने वाला सूर्य कहीं न कहीं उदय होता रहा और उसकी किरनों की रोशनी में मुसलमान अपनी राहों को रोशन करता रहा।

दुनिया में अहल–ए–ईमां मिसले ख़ुर्शीद जीते हैं।
इधर डूबे उधर निकले, उधर डूबे इधर निकले।।

लेकिन यह भी सच्चाई है कि पश्चिमी सभ्यता का पुनर्जन्म जितनी तेज़ी के साथ हुआ है उसके मुक़ाबले में मुसलमानों की तैयारियां बहुत ही सुस्त व धीमी हैं। इसी का परिणाम है कि आज मुसलमान युद्ध में मज़बूती से स्थापित होने के बाद भी रक्षात्मक शैली में है और उसके मानने वाले उसके शानदार अतीत से बेख़बर कमतर होने के एहसास का शिकार हैं।

पश्चिम एक बार फिर अपनी पुरानी सभ्यता को पूरी संसार पर हावी करना चाहता है तथा अपना राजनीतिक वर्चस्व भी चाहता है। दुनिया को वैचारिक रूप से क्षीण करके उसके शरीर व उसकी आत्मा को अपना दास बनाना चाहता है। यद्यपि इस बार उसने दासता को बहुत ही आकर्षक रूप में प्रस्तुत किया है और अधिकार व स्वतन्त्रता के खोखले नारों को भांग की ऐसी गोलियों का रूप दिया है जिसके प्रभाव से पूरी दुनिया झूम रही है और तेज़ी से तबाही की ओर बढ़ रही है।

पश्चिम के षडयंत्रों और उसके फ़रेबी नारों का मुक़ाबला केवल इस्लाम ही कर सकता है और वही मानवता को एक बार फिर जिहालत व अंधकार के गहरे गढ़े से निकालकर इस लोक व परलोक में सफल करा सकता है। इस सच्चाई को स्वयं पश्चिम ने भी स्वीकार किया है। इसीलिए पन्द्रवीं शताब्दी से यूरोप इस्लाम को प्रभावहीन करने व मुक़ाबल से हमेशा के लिए निकालने हेतु प्रयासरत है।

आज दुनिया में भय व आतंक का जो माहौल बनाया जा रहा है और विभिन्न प्रकार के नामों के द्वारा इस्लाम को बदनाम करने की जो कोशिश की जा रही है वह वास्तव में इस्लामी सभ्यता और पश्चिमी सभ्यता की इसी कशमकश के विभिन्न रूप हैं।

पदाधिकारियों की नीलामी

अबुल अब्बास ख़ाँ

मन्डियां तो बहुत सी लगती हैं, सब्ज़ी मन्डी, ग़ल्ला मन्डी, जानवरों की मन्डी इत्यादि लेकिन इस्लाम के इतिहास में एक मन्डी ऐसी भी लगी है कि जिसमें उस समय के साम्राज्य के पदाधिकारी नीलाम हुए। उनकी बोली लगाई गई और गुलामों की तरह उन्हें बेचा गया।

जी हां! यह घटना छठी शताब्दी हिजरी की है। मिस्र में गुलामों की अधिकता थी। उनकी मन्डियां लगती थीं। कुछ ख़रीदे–बेचे जाते, कुछ जिहाद में हासिल किये जाते। अरब के भी थे, अरब के बाहर के भी थे और कुछ गुलाम तुर्क भी थे; अत्यधिक चालाक, राजनीति के माहिर, हालात को परखने वाले। धीरे–धीरे उन्हें अधिकार प्राप्त हुए। उन्होंने धन–दौलत अर्जित की। शासन में सम्मिलित हुए और ऊंचे पदों पर पहुंचकर ऐश्वर्य के साथ जीवन यापन करने लगे। और मुस्लिम समाज उनकी गुलामी से ग़ाफ़िल, उनके अतीत से बेख़बर, उनकी पैरवी की जंजीर गले में डाले हुए अपना जीवन जीने में व्यस्त रहा।

लेकिन! एक ज़ात ऐसी थी होशमन्द थी व दूरदृष्टि रखने वाली थी। जो इस्लामी ज्ञान की अमीन और शरीअत के आदेशों की रक्षक थी। जिसके माथे पर इस्लाम व इस्लामी आदेशो की रक्षा का सितारा चमक रहा था। ईमानी जुर्रत से भरा हुआ मुसलमानों की सरबुलन्दी के लिए तैयार था। न शरीअत के आदेशों में एक शब्द का बदलाव गवारा था, न ही एक लम्हे की देर गवारा थी! बेशक यह ज़ात थी इज़ुद्दीन बिन अब्दुस्सलाम (रह0) की जिन्हें हमारा इतिहास ''शेख़ुल इस्लाम'' कहता है।

शेख़ ने फ़तवा दियाः ''यह पदाधिकारी कल तक गुलाम थे, शरीअत के तरीक़े पर यह आज़ाद नहीं हुए हैं, यह अभी भी गुलाम हैं, इसलिए इनके सारे मामले ग़ैर शरई हैं।''

शेख़ का फ़तवा एक बिजली की तरह था। पदाधिकारियों के ख़ेमों में आग सी लग गई। सब जलभुन उठे, मगर शेख़ के बुलन्द मक़ाम और बुलन्द हैसियत के सामने चुप रहे। किसी में आवाज़ करने की हिम्मत न थी, लेकिन शेख़ का फ़तवा कैसे चुप रहता। हर गली–कूचे, मुहल्ले, क़स्बे और फिर शहर व पूरे देश में फ़तवे की गूंज साफ़ सुनाई देने लगी और लोगों ने उन सभी पदाधिकारियों से नाता तोड़ लिया। उनकी परेशानियां बढ़ने लगीं। हाकिम होकर भी वे अजनबी से हो गए।

पदाधिकारियों की चिन्ता बढ़ती गई। बकवास का सिलसिला शुरू हुआ, शेख़ कौन होते हैं दख़ल देने वाले, हुकूमत के मामले से शेख़ का क्या लेना–देना?चर्चे शुरू हो गए, बादशाह को भी पता चला। हालात पेचीदा होने लगे। आख़िरकार विशेष सभा बुलाई गई। शेख़ भी आए। बहस शुरू हुई। किसी ने रोब दिखाया, किसी ने धौंस जमाई, बादशाह ने पहले नर्मी फिर अकड़ और फिर अपनी बादशाहत का रोब दिखाया, लेकिन शेख़ ने साफ़ कह दिया कि ''इस्लाम का क़ानून सब पर समान रूप से लागू है, यह गुलाम हैं, पहले उन्हें नीलाम किया जाए, और फिर शरई तरीक़े पर आज़ादी का परवाना दिया जाए।'' बस फिर क्या था, पदाधिकारी चीख़ उठे कि यह हमें ज़लील करना चाहते हैं, हम इस देश के हाकिम हैं, दूसरों को हम गुलाम बनाना चाहते हैं, उनकी यह हिम्मत की हमें सरे बाज़ार नीलाम करें?!

पदाधिकारियों की सख़्त बोलियां, हाकिमों की बदसुलूकी और बादशाह का दुर्व्यवहार व हठधर्मी, शेख़ की शान में एक बहुत बड़ी गुस्ताख़ी थी। जिस ज़मीन पर शरीअत के हुक्म न लागू हों, जिस साम्राज्य में इस्लामी क़ानून की लाज न रखी जाए, ऐसे राज्य में सांस लेना भी गवारा नहीं, शेख़ की ग़ैरत ने मिस्र में रुकना गवारा न किया, सामान को जानवर पर लादा, घरवालों को सवार किया, और मिस्र को अलविदा कहते हुए निकल पड़े।

पदाधिकारियों को ख़बर मिली। ख़ुशी की लहर दौड़ गई। आज़माइश से निजात मिली। अब राहत ही राहत है। शेख़ के जाने से जान में जान आ गई। लेकिन यहां तो मन्ज़र ही कुछ और था। शेख़ का क़ाफ़िला चला और फिर क़ाफ़िले पर क़ाफ़िला चला। एक के बाद दूसरा और फिर तीसरा..... एक सिलसिला चल पड़ा। आलिम व नेक लोग, व्यापारी और खेती करने वाले, किसान और मज़दूर भी अर्थात क्या ख़ास क्या आम, सबके सब शेख़ ही के साथ चलने लगे। न किसी को मिस्र प्यारा है, न मिस्र की हरियाली व ख़ुशहाली महबूब, शेख़ के मुक़ाबले दुनिया की हर चीज़ ख़ाक़ के सिवा और कुछ नहीं।

बादशाह को ख़बर हुई, हालात की संगीनी मालूम चली, सरकारी नुमाइन्दों ने कहा, बादशाह सलामत! अगर शेख़ चले गए तो शहर वीरान हो जाएगा। यहां पर ख़ाक़ उड़ने लगेगी, फिर आप किसके बादशाह?और कैसी आपकी प्रजा?बादशाह के पैरों तले ज़मीन खिसक गई, घोड़े पर सवार हुआ और खुद शेख़ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, मिन्नत–समाजत की, हर शर्त मन्ज़ूर की और शेख़ को वापिस शहर ले आया, और तय हुआ कि पदाधिकारी नीलाम किये जाएंगे।

नीलाम होने वालों में सल्तनत का नायब भी था। वह गुस्से से भड़क उठा, नंगी तलवार उठाई, सिपाहियों को साथ लिया और शेख़ के दरवाज़े पर आया, दरवाज़ा खटखटाया, बेटा बाहर निकला, मन्ज़र देखकर घबरा गया, जाकर कहा कि अब्बा जान! आपकी जान को ख़तरा है। शेख़ ने बेपरवाही से जवाब दियाः तुम्हारे अब्बा का ऐसा मुक़द्दर कहां कि उसे शहादत नसीब हो, और घर से बाहर निकले।

नायब गुस्से से लाल–पीला हो रहा था। तेज़–तेज़ सांसे ले रहा था। उसकी आंखों से शोले निकल रहे थे। नंगी तलवार शेख़ का इन्तिज़ार कर रही थी। लेकिन शेख़ को देखते ही तलवार हाथ से छूट गई, धड़ाम से शेख़ के क़दमों में आ गिरा, मेरे आक़ा आप क्या चाहते हैं?शेख़ ने कहा कि मैं तुझे नीलाम करूंगा और तुझे बेचूंगा।

अगले दिन आम मुनादी की गई। बाज़ार खचाखच भर गया। इतिहास का यह अजीब–ग़रीब मन्ज़र था। बाज़ार में अब तक गुलाम बिकते थे लेकिन आज गुलामों की जगह पदाधिकारी थे। एक–एक को हाज़िर किया गया। हरएक की बोली लगाई गई, यद्यपि उनके सम्मान में उनके दाम भी बहुत लगाए गए, बड़ी–बड़ी बोली में उन्हें बेचा गया, जो क़ीमत मिली उसे लोगों की भलाई में ख़र्च किया गया फिर वे गुलाम आज़ाद हुए और अपने पदों पर दोबारा आसीन हुए।

यह घटना इस्लाम की श्रेष्ठता का एक उदाहरण है। निसंदेह ऐसे उदाहरण आज भी दिये जा सकते हैं। घमन्डी सरकारें झुक सकती हैं, इस्लामू आदेशों का अनुपालन कराया जा सकता है, बिगड़े हुए हालात का संवारा जा सकता है, लेकिन पहले ज़रूरत है ईमान के जज़्बे की, इस्लामी ग़ैरत की, और खुदा के सामने खुद को सुपुर्द कर देने की, क्योंकि ''जो अल्लाह का हुआ, अल्लाह उसका हो गया।''

शेषः एकेश्वरवाद क्या है?

..... उसका परिणाम यह होना चाहिए कि तुम अल्लाह के हो जाओ, अल्लाह वाले बन जाओ, एक अल्लाह को मानो, उसके आगे सर झुकाओ, यह सभी संदेष्टाओं की ओर से कही जाने वाली बात है। वे इसीलिए आए, लेकिन हुआ यह कि संदेष्टाओं के जाने के बाद उनके मानने वालों ने मुबालग़ा किया। वे जिस बात की दावत लेकर आए उसके विरुद्ध उन्होंने उन्हीं को उपास्य बना दिया। इसलिए इससे हमेशा चौकन्ना रहने की आवश्यकता है। दूसरी उम्मतों (समुदायों) ने जो किया आज वही काम यह उम्मत (समुदाय) कर रही है। रसूलुल्लाह (स0अ0) ने यह बात कही थी कि जो बनी इस्राईल ने किया तुम बिल्कुल सारे काम वही करोगे, अन्तर केवल यह है कि उन्होंने वे कार्य सामूहिक रूप से किये थे और यह उम्मत (समुदाय) वही सारे काम व्यक्तिगत रूप से करेगी। कहीं पर कुछ लोग यह कार्य करेंगे, कहीं पर कुछ, यहां तक कहा किः

''निसंदेह तुम अपने पहले लोगों की पैरवी करोगे, बालिश्त–बालिश्त और गज़–गज़ के बराबर भी। यहां तक कि यदि उन्होंने किसी गोह (एक रेंगने वाला जानवर जो छिपकली के समान होता है) के सुराख़ में प्रवेश किया तो तुम भी करोगे।''

अर्थात यदि उनमें से किसी अपनी मां के साथ खुलकर दुष्कर्म किया है तो इस उम्मत (समुदाय) में भी ऐसे लोग पैदा हो जाएंगे जो अपनी मां के साथ दुष्कर्म करेंगे।

बात यह है कि शिर्क (बहुदेववाद) की जो शक्लें (स्वरूप) पिछली उम्मतों (समुदायों) में थीं, आज लगभग वही शक्लें इस उम्मत में भी पैदा हो रही हैं, लेकिन इससे हमें चौकन्ना रहने की आवश्यकता है। रसूलुल्लाह (स0अ0) ने चेताया था कि कहीं तुम्हारे अन्दर ऐसी बात न उत्पन्न हो जाए, जिस प्रकार पिछले समुदायों ने बहुदेववाद और बुराइयां अपनायीं तुम भी इसी रास्ते पर पड़ जाओ, आपने जो बात कही कि, ''तुम ऐसा करोगे'' इसमें चेतावनी दी है कि ऐसा करने वाले होंगे, तो तुम अपने आप को ऐसा मत बना लेना। तुम इस मार्ग पर न चलना कि तुम स्वयं रास्ता भटक जाओ, ग़लत रास्ते पर चले जाओ, स्वयं को नर्क के रास्ते पर डाल लो, हमेशा अपने को उससे बचाओ। एक अल्लाह को मानो। उसी के आगे सर झुकाओ।

इस्तिग़फ़ार के कलिमात (बोल)

''अल्लाहुम्मा अग़फ़िरली'' भी इस्तिग़फ़ार के शब्द हैं जिसके माने हैं 'मेरी बख़्शिश फ़रमा' ''रब्बिग़फ़िरली'' 'ऐ रब मेरी मग़फ़िरत कर'।

इस्तिग़फ़ार के सिलसिले में ऐसे कलिमे भी आए हैं जिनको सैय्यदुल इस्तिग़फ़ार कहते हैं:

''ऐ अल्लाह तू ही मेरा रब है, तेरे सिवा कोई मालिक व माबूद नहीं, तुझ ही ने मुझको पैदा किया, मैं तेरा बन्दा हूं, और जहां तक मुझसे बन पड़ेगा तेरे साथ किये हुए अहद व पैमान पर क़ायम रहूंगा। तेरी पनाह चाहता हूं अपने अमल व किरदार के शर से, मैं इक़रार करता हूं कि तूने मुझे नेमतों से नवाज़ा और एतराफ़ करता हूं कि मैंने तेरी नाफ़रमानियां कीं, ऐ मेरे मालिक तू मुझे माफ़ कर दे और मेरे गुनाह बख़्श दे। तेरे सिवा मेरे गुनाह कोई नहीं बख़्श सकता।''

रसूलुल्लाह स०अ० ने फ़रमाया कि जिस बन्दे ने इख़्लास और दिल के यक़ीन के साथ दिन के किसी हिस्से में अल्लाह के दरबार में यह कहा और और उसी दिन रात शुरू होने से पहले उसको मौत आ गई तो वह बिना किसी शक के जन्नत में जाएगा और इसी तरह अगर किसी ने रात के हिस्से में अल्लाह के दरबार में यह कलिमात कहे और सुबह होने से पहले उसका इन्तिक़ाल हो गया तो वह बिलाशुब्हा जन्नत में जाएगा।

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी रह०

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP -19

Issue: 04 APRIL 2017 VOLUME: 09

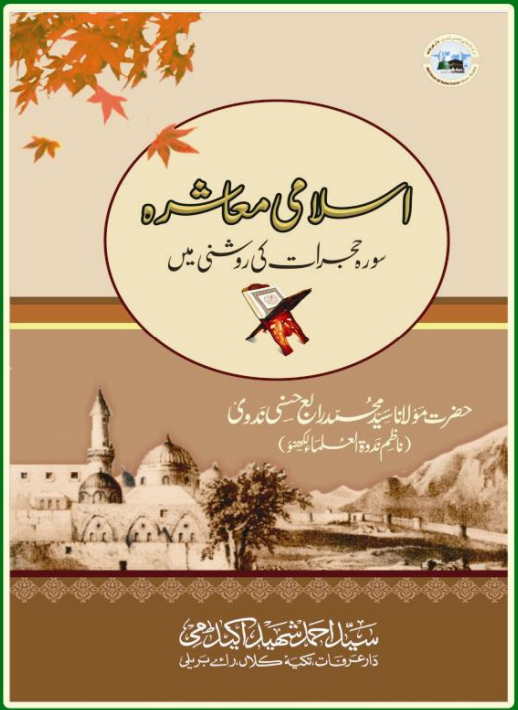

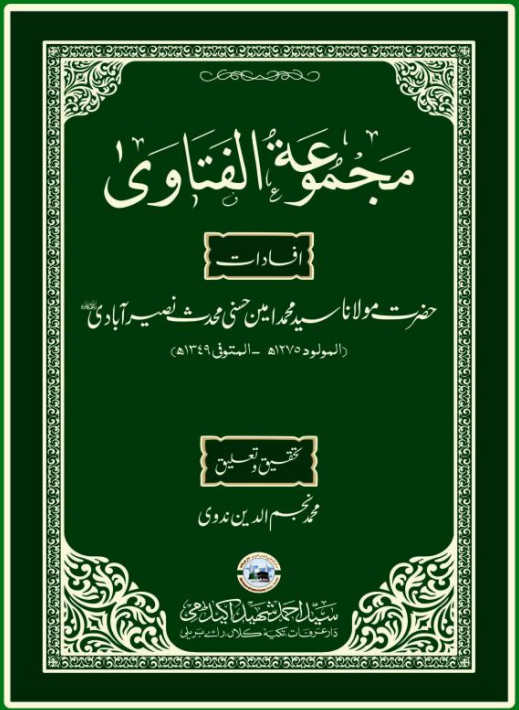

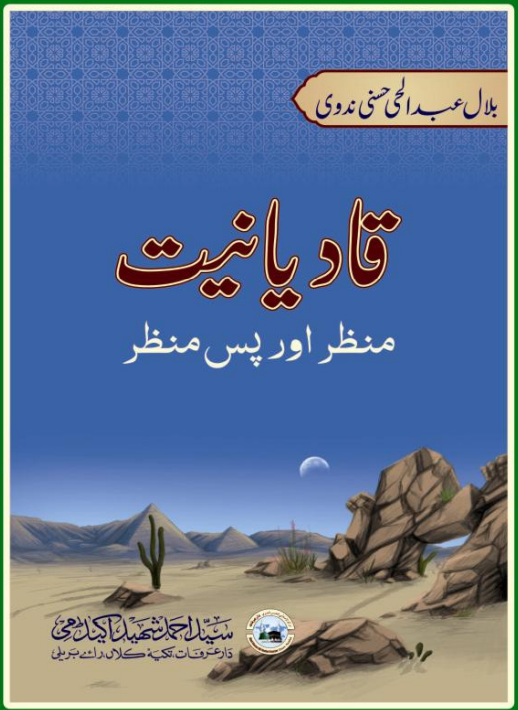

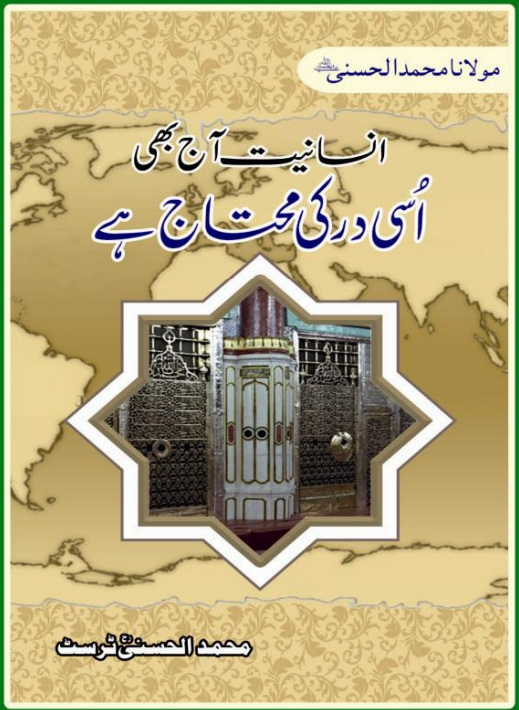

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9565271812
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.